भारतीय संगीत प्रसारक मंडळ, पुणे

परीक्षा पाठ्यक्रम

परीक्षा पाठ्यक्रम

प्रारंभिक से अलंकार तक

१) गायन - वादन

२) तबला

३) कथ्थक

४) भरतनाट्यम्

प्रकाशक : भारतीय संगीत प्रसारक मंडळ, पुणे

■ **प्रकाशक :**

भारतीय संगीत प्रसारक मंडळ, पुणे

४९५, शनिवार पेठ, पुणे - ४११ ०३०

■ **प्रकाशन :** जून २००८

■ **मुख्य कार्यालय :**

४९५ शनिवार पेठ, मेहुणपुरा, पुणे ४११०३० फोन : ०२०-२४४५०७९५

email - gandharvapune@ gmail.com

Website - www. gandharvapune.com

■ **मुद्रक :**

रोहिणी ग्राफिक्स

१०२५/बी, सदाशिव पेठ, पुणे-३०.

फोन : ०२०-२४४७ १४३९

■ **मूल्य : ६० रूपये**

अनुक्रमाणिका

		पान क्र.
१.	परीक्षा नियमावलि	१
२.	गायन - वादन पाठ्यक्रम	३
३.	तबला पाठ्यक्रम	१७
४.	कथ्थक पाठ्यक्रम	२६
५.	भरतनाट्यम् पाठ्यक्रम	४३
६.	भरतनाट्यम् पाठ्यक्रम (इंग्रजी)	५४

परीक्षा नियमावलि

१. भारतीय संगीत प्रसारक मंडल द्वारा जुलाई और दिसंबर इन दो सत्रोंमें संगीत की परीक्षाएँ आयोजित की जाती है ।

जुलाई सत्र के लिए २० जून तक आवेदन पत्र भरे जा सकते है । ३० जून तक विलंब शुल्क के साथ आवेदन पत्र भरे जा सकते है ।दिसंबर सत्र के लिए २० नवंबर तक आवेदन पत्र भरे जा सकते है ।३० नवंबर तक विलंब शुल्क के साथ आवेदन पत्र भरे जा सकते है ।

२. परीक्षा केंद्रपर २० परीक्षार्थी हो तो ही परीक्षक भेजे जा सकते है ।

अगर २० से कम परीक्षार्थी हो तो २० परीक्षार्थियोंका प्रारंभिक का परीक्षा शुल्क भरने पर परीक्षक भेजे जा सकते है । परीक्षकोंके निवास और भोजन की व्यवस्था केंद्रचालक करेंगे ।

३. मध्यमा प्रथम परीक्षा के आवेदन पत्र के साथ पिछले परीक्षा के प्रमाणपत्रकी प्रतिलिपि भेजना अनिवार्य है । मध्यमा प्रथम से सभी परीक्षाओंमें सम्मिलित होने के लिए दो परीक्षाओंमें कम से कम १ साल का अवधी अनिवार्य है ।

४. मध्यमा प्रथम परीक्षासे गायन की परीक्षा तानपूरे के साथ ली जाएगी । हार्मोनियम की संगत स्वीकृत नहीं है । मध्यमा प्रथम से तबला विषयकी परीक्षाएँ नगमे के साथ होगी ।

५. परीक्षाओं में क्रियात्मक एवं लिखित दोनों विभागों में नियमानुसार उत्तीर्ण होना आवश्यक है ।

अगर विद्यार्थी लिखित अथवा क्रियात्मक इनमें से किसी एक में अनुत्तीर्ण है तो प्रारंभिक से मध्यमा पूर्ण तक दोनों परीक्षाएँ फिरसे देनी होगी । विशारद प्रथम और पूर्ण परीक्षा में अगर उत्तीर्ण हुआी लिखित अथवा क्रियात्मक परीक्षामें ५०% से जादा अंक प्राप्त है तब विद्यार्थी अगले सत्र में को सिर्फ अनुत्तीर्ण विषय की परीक्षा देनी होगी । इसके साथ केंद्रचालक का अनुज्ञा पत्र तथा आधा परीक्षा शुल्क लिया जाएगा । अन्यथा १ साल बाद परीक्षाएँ फिरसे ली जाएगी ।

६. अगर विद्यार्थी गायन विशारद है और स्वरवाद्य की परीक्षा देना चाहे तो सीधे विशारद प्रथम परीक्षामें सम्मिलित हो सकता है । और अगर स्वरवाद्यमें विशारद है और गायन विशारद करना चाहे तो विशारद प्रथम से परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है ।

७. बी. ए (संगीत) विद्यार्थी को विशारद प्रथम से परीक्षा देना आवश्यक है ।

८. कलाकार अथवा संगीतज्ञों के सीधे विशारद प्रथम परीक्षामें सम्मिलित होने के लिए अनुमति केवल निम्मलिखित शर्तोंपर दी जा सकती है ।

१) आकाशवाणी / दूरदर्शन की B + ग्रेड

२) लिखित एवं क्रियात्मक परीक्षा केवल गांधर्व महाविद्यालय, पुणे में ली जाएगी ।

९. नृत्य की परीक्षाएँ केवल गांधर्व महाविद्यालय, पुणे में ली जायेगी ।

प्रारंभिक परीक्षा - गायन - वादन

पूर्णांक - ५० **क्रियात्मक - ४०** **मौखिक - १०**

इस परीक्षा में स्वर और तालसे परिचित होना तथा उसका क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग करना विद्यार्थी से अपेक्षित है।

स्वरज्ञान - शुद्ध स्वर सरल समुदाय में गाना। स्वर अलंकारों से प्रारंभिक परिचय। पाँच स्वर अलंकार आना आवश्यक है। ४ स्वरोंके अलंकार उदा. सारेगम, रेगमप.... / सागरेसा, रेमगरे,...।

रागज्ञान - निम्नलिखित रागोंमें एक गीत और किन्ही २ रागोंमें एक लक्षणगीत

१. भूपाली, २. दुर्गा, ३. खमाज, ४. कल्याण

५. भिमपलास, ६. काफी, ७. देस, ८. बागेश्री

इन रागोंके आरोह-अवरोह गाना-बजाना तथा गाए हुए सरल स्वर समुदाय द्वारा पहचानना।

तालज्ञान - त्रिताल और झपताल का ज्ञान और हाथसे ताल पकडना।

मौखिक - पाठ्यक्रम के रागों का वर्णन (स्वर, वादी, संवादी, समय, आरोह, अवरोह, आदि।)

निम्नलिखित शब्दोंकी संक्षिप्त परिभाषाएँ :-

संगीत, आरोह, अवरोह, वादी, संवादी, ताल, सम, काल, मात्रा, ठोका (टाळी), स्वर

प्रवेशिका-प्रथम वर्ष - गायन - वादन

पूर्णांक - १०० **क्रियात्मक - ७५** **मौखिक - २५**

प्रारंभिक का पूरा अभ्यास, साथमें

स्वरज्ञान - सात शुद्ध स्वरोंका गाना, बजाना, पहचानना। शुद्ध स्वरोंके सात सरल ‘अलंकार विलंबित और मध्य लयमें गाना-बजाना। ६ स्वरोंके अलंकार जैसे सारेसारेगम, रेगरेगमप.../सारेसागरेसा, रेगरेमगरे... दो या तीन स्वर लगाने और पहचानने की क्षमता।

रागज्ञान - प्रारंभिक की रागोंमे से किन्ही ४ रागोंमें आलाप, बोलतान और तान सहित ५ मिनट तक गानेकी या बजाने की तैयारी। सरल आलापों से राग पहचानना। अन्य ४ रागोंके आरोह, अवरोह, स्थाई, अंतरा का ज्ञान आवश्यक.

तालज्ञान - त्रिताल, झपताल, दादरा, केहरवा, हातसे ताल पकड़कर दिखाना।

मौखिक - पाठ्यक्रम के रागोंका शास्त्रीय ज्ञान।

स्वर, आरोह, अवरोह, जाती, वादी, संवादी, वर्जित स्वर, पकड आदि का विवरण।

निम्नलिखित शब्दोंकी संक्षिप्त परिभाषाएँ :-

आरोह, अवरोह, संगीत, वादी, संवादी, ताल, सम, मात्रा, काल (खाली), ठोका (टाळी), खंड (विभाग), शुद्ध स्वर, कोमल स्वर, तीव्र स्वर, नाद, सप्तक, मुख्य अंग, आलाप, तान, लक्षणगीत, ध्वनी, मेल, अलंकार, पलटा, राग, स्वरमालिका (सरगमगीत)

छोटा ख्याल, स्थायी, अंतरा, लय (विलंबित, मध्य, द्रुत), ठेका, वर्जित स्वर, आवर्तन।

प्रवेशिका पूर्ण - गायन - वादन

पूर्णांक - १५०   क्रियात्मक - १००   लिखित - ५०

स्वरज्ञान - शुद्ध स्वरों के गाने बजाने तथा पहचानने में निपुणता। विकृत स्वरोंका ज्ञान चार शुद्ध स्वरोंके समूह तथा तीन स्वरों के समूह को (जिसमें एक या दो स्वर विकृत हो) गाना बजाना तथा पहचानना। आठ स्वरोंके अलंकार जैसे सारेगरे सारेगम, रेगमग रेगमप.../सारेगरे सागरेसा, रेगमग रेमगरे...

रागज्ञान - प्रथम वर्ष के रागों की पुनरावृत्ती के साथ इस वर्ष निम्नलिखित १० राग सीखने है।

१) बिहाग २) केदार ३) सारंग ४) धानी ५) तिलककामोद

६) भैरव ७) तिलंग ८) पिलु ९) पटदीप १०) अल्हैया बिलावल

इन रागोंमें आरोह, अवरोह, प्रारंभिक आलाप-तान, बोलतान तथा एक एक मध्य लय का ख्याल गत सीखनी है। इन रागों में से किन्ही ५ रागों में मध्य लय के ख्याल गत आलाप-तान, बोलतान सहित ८ मिनट तक गाने-बजाने की तैयारी। इन दस रागों में से किन्ही तीन रागों में लक्षण गीत, एक भजन और एक नाट्य गीत विद्यार्थियों से तानपूरे पर गाने का अच्छा अभ्यास अपेक्षित है। गाये हुए आलापों द्वारा राग पहचानने की क्षमता। पहले सिखे हुए सभी ताल और इस वर्ष के द्रुत एकताल, रुपक हाथसे पकडकर उसके बोल बोलना।

प्रवेशिका पूर्ण - लिखित

१. पहले वर्ष का पूरा अभ्यास।

२. अंश, न्यास, वक्रस्वर, दुर्बल एवम् कणस्वर, लोम, अनुलोम, विलोम, प्रतिलोम, अनुवादी, विवादी, आलाप, तान, बोलतान, अलंकार आदि पारिभाषिक संज्ञाओं की जानकारी। गान क्रिया अथवा वर्ण, स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी, ध्वनी, नाद, श्रुती, जनक राग, जन्य राग, गीत के अवयव (स्थायी, अंतरा, संचारी, अभोग) मींड, गमक

३. शुद्ध, छायालगत्व, मिश्र, संकीर्ण आदि राग जातियों की जानकारी।

४. राग की रचना के नियम।

५. पिछले ८ राग और नये १० रागोंकी सशास्त्र संपूर्ण जानकारी।

६. अपने पाठ्यक्रमके ताल और पाठ्यक्रमके बिहाग, धानी, भैरव, बिलावल, तिलंग इन रागोंके छोटे ख्याल पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर अथवा पं. भातखंडे स्वरलिपी में लिखनेका अभ्यास।

७. पं. विष्णु दिगंबर पलुस्करजी का संक्षिप्त चरित्र।

मध्यमा-प्रथम - गायन - वादन

पूर्णांक - २००   क्रियात्मक - १००   लिखित - १००

सूचना - इस वर्ष की तथा आगे की सभी परीक्षाओं के गायन परीक्षार्थियों के साथ हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नहीं है।

१. विकृत और शुद्ध स्वरों को समुचित पहचानना।

२. निम्नलिखित रागों में एक विलंबित तथा एक द्रुत ख्याल। इस वर्ष मुख्य रुप से अपने मन से विस्तार करते हुए मुखड़ा पकड़ने का अभ्यास होना चाहिए। इन चार रागोंमेंसे दो रागों को १२ मिनट तक आलाप, बोलतान, तानसहित प्रस्तुत करने की क्षमता अपेक्षित है।

१. कल्याण, २. बागेश्री, ३. भैरव, ४. बिहाग

३. निम्नलिखित रागों में मध्यलय की बंदिश आलाप, बोलतान, तान सहित गाने-बजाने की क्षमता (१० मिनिट तक)।

१. हमीर, २. आसावरी, ३. शंकरा, ४. मालकंस, ५. मांड, ६. देसकार

४. इस वर्षके रागों में दो धृपदे-एकपट-दुप्पट। इस वर्षके रागों में दो तराने, भजन, भक्तिगीत या नाट्यसंगीत मे से एक प्रकार तथा द्रुत एकताल में बंदिश।

५. राग पहचानने में निपुणता

ताल ज्ञान -

पिछले वर्ष के सभी ताल और इस वर्ष चौताल,

एकताल हाथ से ताली देकर बोलना तथा इनकी दुगुन करना।

मध्यमा प्रथम : लिखित

१. सीखे हुए सभी रागोंकी तुलनात्मक दृष्टीसे पूरी जानकारी।

२. सीखे हुए सभी तालों के बोल स्वरलिपी पद्धतीसे लिखना तथा उनकी दुगुन लिपिबद्ध करना ।

३. धृपद, धमार, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल, भजन आदि गीत प्रकारोंका तात्त्विक ज्ञान।

४. लोकगीत, भावगीत, और चित्रपट गीत आदि के बारे में सामान्य ज्ञान।

५. षड्ज-मध्यम तथा षड्ज-पंचम भावका अर्थ और वादी संवादी के संबंधमें नियम।

६. सीखे हुए रागों से द्रुत चीज की स्वरलिपी लिखना।

७. उत्तर हिंदुस्थानी और दक्षिण हिंदुस्थानी संगीत पद्धतीका संक्षिप्त परिचय।

८. नादकी उच्चनीचता, नादकी जाती, नाद के गुण।

९. घसीट, जमजमा, मुर्की का पारिभाषिक अर्थ।

१०.पंडित वि. ना. भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर की संक्षिप्त जीवनी और उनकी स्वरलिपियों का अभ्यास।

११.ध्रुपद की दुगुन स्वरलिपिबद्ध करना।

मध्यमा-पूर्ण - गायन - वादन

पूर्णांक - २०० **क्रियात्मक - १००** **शास्त्र - १००**

स्वरज्ञान -

१. शुद्ध तथा विकृत स्वर गाने, बजाने तथा पहचानने में निपुणता। तानपुरा मिलानेका सामान्य ज्ञान। गायन-वादन में विभिन्न अलंकारोंका समुचित प्रयोग।

२. स्वरलिपी पढ़ने और लिखने का अभ्यास।

३. निम्नलिखित रागोंमें एक विलंबित तथा एक द्रुत ख्याल। इसमें मुख्य रूप से अपने मन से विस्तार करते हुए मुखड़ा पकड़ने का अभ्यास होना चाहिए। इन ५रागोंमें से २ रागोंको १५ मिनट तक प्रस्तुत करने की (आलाप, बोलतान, तानसहित) क्षमता अपेक्षित है।

(१) छायानट (२) पुरिया धनाश्री (३) भीमपलास (४) जयजयवंती (५) आसावरी

४. निम्नलिखित रागों में मध्यलय की बंदिश १० मिनट तक (आलाप-तानसहित) गाने-बजाने की क्षमता अपेक्षित है।

(१) कामोद (२) कालिंगडा (३) केदार (४) हिंडोल (५) बहार

५. इस वर्ष के रागों में एक धृपद, एक धमार (दुगुन-चौगुन के साथ) तथा दो तराने तथा एक द्रुत एकताल इस प्रकार पाँच अन्य गीत प्रकार तैयार करने है।

६. उपशास्त्रीय संगीत के लिये इस वर्ष रागों के नाट्यसंगीत, भजन, भावगीत इसमें से एक प्रकार में एक बंदिश गाने की क्षमता।

तालज्ञान -

पहले तीन वर्षोंके सभी ताल और इस वर्ष तेवरा और सुरफाक्ता (सुलताल) इस तालके बोल, ताल पद्धतीसे लिखना और हाथसे ताल देकर बोल बोलना।

मध्यमा पूर्ण - लिखित परीक्षा

पहले तीन वर्षोंके विषयोंको विस्तृत रूप से दोहराकर निम्नलिखित विषयों का अध्ययन।

१) उपरके रागोंकी तुलनात्मक दृष्टीसे पूरी जानकारी और आलाप ताना।

२) उपरके तालोंकी खंड, बोल, सम, काल, आदि की जानकारी और वे नोटेशन पद्धतीसे लिखना।

३) धृपद, धमार ख्याल आदी गीतप्रकारों का तात्त्विकज्ञान।

४) पूर्वांग, उत्तरांग, पूर्वराग, उत्तरराग, वर्ण, खटका, मुरकी, गमक, आंदोलन और गिटकडी इन पारिभाषिक शब्दोंकी परिभाषा।

५) सीखे हुए रागोंमें से छोटे और बड़े ख्यालका नोटेशन लिखना।

६) पं. बाळकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर तथा उस्ताद अब्दुल करीम खाँ इन गायकों की संक्षिप्त जीवनी।

७) शुद्ध, छायालगत्व, मिश्र, संकीर्ण आदी राग-जातियों की जानकारी।

८) तानोंके प्रकार सरल, कूट, मिश्र, वक्र.

९) ध्वनि, ध्वनीकी उत्पत्ती, कंपन, आंदोलन संख्या, नाद की ऊँचाई का आंदोलन संख्या एवं तार की लंबाई तथा तनाव से संबंध।

१०) २२ श्रुतियों का स्वरों में विभाजन (प्राचीन तथा अर्वाचीन मत से)। दक्षिण भारतीय तथा उत्तर भारतीय संगीत पद्धतियों की तुलना स्वरस्थानोंकी दृष्टीसे।

११) गायकों के गुणदोष/वादकों के गुणदोष

१२) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों तथा विषयोंका अभ्यास तथा स्पष्टीकरण (उदाहरणसहित) अल्पत्व, बहुत्व, आविर्भाव, तिरोभाव, अनुलोप, विलोम, गमक, सूत, घसीट, जमजमा, मुर्की, छूट, चिकारी, झाला।

१३) अब तक सीखे हुए रागों को पूर्ण विवरण तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन।

१४) विभिन्न लयकारियों (दुगुन, तिगुन, तथा चौगुन) तथा सीखे हुए गीत/गतोंको पलुस्कर तथा भातखंडे स्वरलिपियों में लिखना।

१५) थाट-पद्धती के गुणदोषोंकी संक्षिप्त जानकारी।

विशारद प्रथम - गायन - वादन

पूर्णांक - २५०   क्रियात्मक - १५०   शास्त्र - १००

क्रियात्मक -

१) इस वर्ष तथा अगले वर्ष में गायन-वादन शैली के विकास की दृष्टीसे विशेष प्रयत्न अपेक्षित है। रागस्वरूप, ताल तथा गायन- वादन के विस्तार के विविध अंगों (आलाप, तान, बोलतान आदि विविध अंगों) तथा बंदिश को अच्छी तरहसे समझाते हुए गायन- वादन शैली को संतुलित एवं प्रभावशाली बनाने की ओर विद्यार्थी का ध्यान आकृष्ट कराया जाए।

२) रागोंका अपने मनसे आलाप तानोंद्वारा सुंदरतासे विस्तार करना तथा उसमें अलंकारिक तान की रचना करना। सरल, स्थायी, वर्णयुक्त, फिरत, चमत्कारपूर्ण गायन-वादन में स्वयं स्फूर्त विस्तार करने की क्षमता।

रागज्ञान -

अ) निम्नलिखित रागोंमें एक विलंबित ख्याल/गत तथा द्रुत ख्याल/गत तैयार करने है। इन सभी रागों का स्पष्ट स्वरूप ज्ञान तथा उनको समझकर आलाप, बोलतान, तानसहित १० मिनट तक विस्तार करने की क्षमता अपेक्षित है।
१) पुरिया, २) बिभास, ३) भूप, ४) मियाँमल्हार, ५) मुलतानी, ६) दरबारी कानडा, ७) बिलावल.

आ) निम्नलिखित रागोंमें मध्य लय की बंदिश/गत आलाप, बोलतान, तानसहित १५ मिनट तक गाने/बजाने की क्षमता होनी चाहिए। १. अडाणा, २. बसंत, ३. गौड सारंग, ४. झिंझोटी, ५. जौनपुरी.

इ) इस वर्ष के रागों में दो धृपद, दो धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन के साथ) दो तराने तथा एक चतरंग या त्रिवट इस प्रकार सात अन्य बंदिश तैयार करनी है।

ई) उपशास्त्रीय संगीत के लिये इस वर्ष ठुमरी, नाट्यसंगीत, भावगीत, दादरा तथा अन्य कोई प्रकारों में से कोई एक प्रकार तैयार करना है।

तालज्ञान

तेवरा, दिपचंदी, तिलवाडा (उपराके रागोंमें से एक ख्याल तिलवाडा ताल में आना आवश्यक है।)

विशारद प्रथम - लिखित

१. उपरके रागों का तुलनात्मक दृष्टीसे पूरा ज्ञान।
२. सिखाए हुए ताल, खंड वगैरह जानकारी सह स्वरलिपी पद्धतीसे लिखना।

३. चतरंग, ठुमरी, होरी, टप्पा, भजन, अष्टपदी आदि गीत प्रकारों का तात्त्विक ज्ञान।
४. ध्वनीके बारेमें जानकारी, थाट और रागपद्धती, संधीप्रकाश राग और आविर्भाव, तिरोभाव इनकी जानकारी।
५. सिखाए हुए बडे और छोटे ख्यालका नोटेशन लिखना।
६. धृपद या धमार की दुगुन स्वरलिपी पद्धतीसे लिखना।
७. पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समता-विभिन्नता का अध्ययन। लिखित स्वरसमुदाय में राग पहचानना तथा उनका विस्तार करना। राग के मुख्य स्वरसमुदायों, स्वर संगतियों तथा सूक्ष्म भेदों से पूर्ण परिचय।
८. आधुनिक आलाप गायन की विधि, तानों के विविध प्रकारों का विस्तृत विवरण, विदारी, रागलक्षण (आधुनिक और प्राचीन),
जाति-गायन, विन्यास-सन्यास-अपन्यास, अल्पत्व-बहुत्व, आविर्भाव, तिरोभाव, गायकी-नायकी, लाग-डांट, धमार आदि गीतों में विभिन्न लयों के बांट करना।
९. सरल सरगम और धुन बनाने का अभ्यास।
१०. विविध गीतप्रकार प्रबंध, चतुरंग, त्रिवट, होरी, कजरी, चैती, धृपद, धमार, ठुमरी ख्याल आदि की गायकी के बारे में जानकारी तथा इन सबकी स्वर-लिपी बनाने का अभ्यास।
११. पलुस्कर तथा भातखंडे स्वर-लिपी पद्धती में स्वरलिपी लिखने में समान निपुणता।
१२. वर्तमान प्रसिद्ध गायकों और वादकों की शैलियों के बारे में विस्तृत अध्ययन।
१३. पाठ्यक्रम के तालों को दुगुन, तिगुन, चौगुन में लिखना।

निम्नलिखित विषयों का ज्ञान :

१४. रागों के तीन वर्ग (रे-ध कोमल, रे-ध शुद्ध और ग-नी कोमल) रागों का समय चक्र। राग-रागिनी पद्धति तथा थाट (मेल) पद्धती की जानकारी संक्षिप्त इतिहास। षड्ज-पंचम तथा षड्ज-मध्यम संवाद। स्वरों की आंदोलन संख्याएँ निकालने की विधि, जबकि उनकी तार की लम्बाइयाँ दी हों तथा आंदोलन संख्या दी होने पर, तार की लम्बाई निकालना। मध्यकालीन तथा आधुनिक पंडितों के स्वर स्थानों की तुलना तार की लम्बाई की सहायता से।
१५. निम्नलिखित विषयों के आधार पर निबंध : १. संगीत और साहित्य, २. लोकसंगीत, ३. शास्त्रीय संगीत के वाद्य तथा उनका वर्गीकरण, ४. संगीत की वर्तमान समस्याएँ, ५. गायन संगति में वादन का महत्त्व तथा उसकी सीमाएँ, ६. संगीत के विकास में नवीन प्रयोगों का महत्त्व (वृंदवादन, वृंदगान, फिल्मी संगीत, पाश्चात्य संगीत का अनुकरण), ७. राग और रस

१६. संगीत में प्रचलित प्रमुख घरानों का संक्षिप्त इतिहास। स्व. अल्लादिया खाँ, स्व. उस्ताद बडे गुलाम खाँ, स्व. पं. वि. ना. पटवर्धन, स्व. श्री. ना. रातांजनकर, उस्ताद अली अकबर खाँ, पं. रविशंकर, उस्ताद विलायत खाँ इनके जीवन तथा कार्य का परिचय।

विशारद पूर्ण - गायन - वादन

पूर्णांक - २५० **क्रियात्मक - १५०** **लिखित - १००**

इस वर्ष सभा में गाने बजाने का अभ्यास तथा उसमें निपुणता प्राप्त करना अपेक्षित है। रागोंका सूक्ष्म परिचय, संगीत के विभिन्न विषयोंपर (क्रिया और शास्त्र) मौलिक विचार तथा उनको समझने तथा समझाने की योग्यता विद्यार्थी में होनी चाहिए। क्योंकि इस परीक्षामें उत्तीर्ण होते ही विद्यार्थी संगीतके क्षेत्रमें पदार्पण करने के योग्य समझा जाता है। गायन वादनमें अपनी प्रगती होनी चाहिए। अपना वाद्य मिलाने में निपुणता। संगीत की विभिन्न गायकी-प्रकारों से क्रियात्मक रूप से परिचय। धृपद की नोम-तोम और बोलबांट, ठुमरी में बोल बनाना, तराने की तैयार ताने तथा लयकारी, टप्पा अंग की ताने। एक प्रकार इस वर्ष के विद्यार्थी को संगीत जगत के हर क्षेत्र तथा उसके विविध अंगों और रूपों से परिचित होना आवश्यक है। जिससे उसका दृष्टीकोन व्यापक बने और वह योग्य शिक्षक बन सके।

स्वरज्ञान -

अ) गाई-बजाई हुई अथवा स्वर लिपीबद्ध किसी भी स्वररचना को आत्मसात् करने की क्षमता। सुनी हुई अथवा सीखी हुई रचना की स्वरलिपी मूल रूप में तथा गायकी अंग में परिवर्तित रूप में करने की क्षमता।

आ) रागोंकी प्रकृतीका सूक्ष्म अध्ययन। उनमें स्वतंत्रता से विचरण (आलाप, तान, तोडे, बोलतान के रूप में), नयी स्वररचनायें बनाना (सरगम, गीत, गत, अथवा वृंदवादन) आविर्भाव, तिरोभाव, गमक, मींड, आंदोलन आदि का विस्तारसे रसानुकूल समुचित प्रयोग करने का अभ्यास। बंदिश के वजन तथा स्वरूप को देखते हुए विस्तार करने की योग्यता।

१) निम्नलिखित रागोंके विलंबित तथा द्रुत ख्याल। मसीतखानी तथा रजाखानी गत तैयार करनी है। विलंबित ख्याल विविध तालोंमें (एकताल, तीनताल, तिलवाडा, झुमरा) तैयार किए जाए। इन सभी रागोंका स्पष्ट स्वरूप ज्ञान तथा उनको २० से ३० मिनट तक गाने- बजाने की क्षमता अपेक्षित है। वादन के लिए विलंबित गत संपूर्ण विस्तार के साथ तैयार करनी है।

१. गौडमल्हार, २. गौडसारंग, ३. ललत, ४. श्री, ५. पूर्वी, ६. मारवा, ७. तोडी

२. निम्नलिखित रागोंमें मध्यलय की बंदिश/गत १५ मिनट तक आलाप-तान-तोडोंसहित गाने-बजाने की क्षमता होनी चाहिए। रागस्वरूप - का स्पष्ट ज्ञान तथा विस्तार करने की क्षमता अपेक्षित है।

१. जोगी, २. सिंदोरा, ३. काफी, ४. तिलंग, ५. सोहोनी

३. इस वर्ष के रागों में धृपद, धमार, आड, दुगुन, तिगुन, चौगुन के साथ दो तराने, एक त्रिवट, इस प्रकार पाँच अन्य बंदिशें तैयार करनी है।

४. उपशास्त्रीय संगीत के लिये इस वर्ष ठुमरी, नाट्यसंगीत, दादरा तथा तत्सम अन्य कोई प्रकार (किसी प्रादेशिक भाषामें) इन में से कोई भी प्रकार तैयार करना है।

तालज्ञान -

अभी तक सीखे हुए सभी तालों का संपूर्ण परिचय तथा इनको हाथसे ताली देकर बोलना तथा विभिन्न लयकारियों में बोलना।

इस वर्ष के ताल - १. झुमरा, २. आडा चौताल, ३. धीमा-त्रिताल, ४. धमार, ५. मत्तताल, ६. सूरफाक्ता.

विशारद पूर्ण - लिखित

१. पिछले सभी वर्षोंका विवरण सहित ज्ञान।

२. स्व. पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर, स्व. पं. बाळकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, स्व. पं. रामकृष्णबुवा वझे, संगीत सम्राट तानसेन, स्व. पं. ओंकारनाथ ठाकूर, ग्वाल्हेर के पं. शंकरराव पंडित जी, मसीत खाँ, रजा खाँ आदिके जीवनियों का संक्षिप्त परिचय।

३. **निबंधलेखन :** विषय-ख्याल गायनकी पद्धतियाँ। संगीत में काव्य का स्थान। ग्वालियर और जयपूर की गानेकी पद्धतियोंका साम्य और भेद। दक्षिण भारत और उत्तर भारत की संगीत पद्धती की जानकारी। राग-रागिनी पद्धती। थाट पद्धती एवं रागांग पद्धती का आलोचनात्मक अध्ययन. २२ श्रुतियोंका स्वरोंमें विभाजन (प्राचीन तथा अर्वाचीन मतसे)

निम्नलिखित विषयों का यथोचित ज्ञान :

१. निबद्ध गान के प्राचीन प्रकार, प्रबन्ध वस्तु आदि (धातु), अनिबद्ध, गान के प्राचीन प्रकार, रागालाप, रूपकालाप आदि।

२. रागों का विस्तृत, तुलनात्मक और सूक्ष्म वर्णन, तथा उनमें स्वरचित आलाप और तानें लिखकर सम-प्राकृतिक रागों में समता, विभिन्नता दिखलाना।

३. विभिन्न रागों में अल्पत्व-बहुत्व, आविर्भाव-तिरोभाव तथा अन्य रागों की छाया का वर्णन करते हुए आलाप लिखना।

४. कठिन लिखित स्वरसमूहोंद्वारा राग पहचानना।

५. दिए हुए रागों में नई धुन बजाना।

६. तालों के ठेकों को कठिन लयकारियों में लिखना तथा बोलना। (दुगुन, तिगुन, चौगुन, डेढ़गुन, ३ में २, ३ में ४, ४ में ३)

७. वृंदवादन (आर्केस्ट्रा) रचना के नियम तथा प्रचलित वाद्यों को मिलाने का ढंग।

८. प्रत्येक शैली का गीत पं. पलुस्कर तथा पं. भातखंडेजी की स्वरलिपी पद्धति में लिखने की क्षमता।

९. श्रुतिस्वर विभाजन के सम्बन्ध में संपूर्ण इतिहास का समुचित ज्ञान तथा उसका तीन कालों में विभाजन-प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक। इन तीनों कालों के मुख्य ग्रंथ तथा वर्णित मतों में समता और विभिन्नता। मध्यकालीन, आधुनिक तथा पाश्चात्य स्वरस्थानों की तुलना। हिंदुस्थानी स्वर सप्तक में मेजर माइनर और सेमीटोन। दक्षिण की तालपद्धति से उत्तर की तालपद्धतियाँ, ग्राम मूर्च्छना सम्बन्धी ज्ञान, कलावन्त, पंडित, वाक्गेयकार, खंडार व नोहार आदि बानी, गमक के प्रकार।

१०. पिछले पारिभाषिक शब्दों का सुस्पष्ट ज्ञान।

११. संगीत का अद्ययावत् संक्षिप्त इतिहास।

१२. तानपूरे में उत्पन्न होने वाले सहायक नादों का वर्णन, तथा श्रुति संबंधी विशेष ज्ञान।

१३. राग-रागिनी पद्धति, थाट-पद्धति एवं रागांग-पद्धति का आलोचनात्मक अध्ययन।

अलंकार प्रथम - गायन - वादन

पूर्णांक - ५०० **क्रियात्मक - ३५०** **लिखित - १५०**

विस्तृत अध्ययन के राग -

१. गुजरी तोडी २. मारुबिहाग ३. शामकल्याण ४. परज ५. शुद्ध कल्याण ६. रामकली ७. नायकी कानडा ८. पूर्वाकल्याण ९. देवगिरी बिलावल १०. शुद्ध सारंग ११. सूरमल्हार

साधारण ज्ञान के लिये निम्नलिखित राग है -

१. भैरव-बहार २. कलावती ३. अभोगी ४. बसंत-बहार ५. यमनी- बिलावल ६. जोग ७. मेघ-मल्हार ८. रागेश्री ९. चंद्रकंस १०. हंसध्वनी

मंच-प्रदर्शन के लिये विद्यार्थी एक राग संपूर्ण विस्तार के साथ तथा एक ठुमरी, भजन अथवा ललित शैली की कोई भी रचना चुन सकता है। विस्तृत अध्ययन के रागों में विलंबित और द्रुत रचना के साथ पूर्ण विस्तार अपेक्षित है। इसके अलावा इन रागोंमें रचना वैचित्र्य, ताल वैचित्र्य आदि का ध्यान रखकर अतिरिक्त बंदिशों का संकलन विद्यार्थी को करना चाहिए। जिसमें धृपद धमार, तराने, चतरंग, त्रिवट, विविध तालों की बंदिशें आदि को समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हो। गायन वादन की विभिन्न शैलियों को प्रदर्शित करनेवाली कुछ रचनाएँ भी संग्रहित करनी चाहिए।

सभी प्रचलित तालों के ठेके विभिन्न लयकारियों में बोलने का अभ्यास होना चाहिए। (दुगुन, तिगुन, चौगुन, डेढगुन, सवागुन इत्यादी)

स्वरलिपी करने तथा पढ़ने में विशेष योग्यता। तुरन्त नई स्वररचना बनाने का अभ्यास।

दिसंबर २००८ मे अलंकार प्रथम तथा द्वितीय वर्ष गायन, वादन के पाठ्यक्रम में सुधार होगा। जो दिसंबर २००९ से कार्यान्वित होगा।

संगीत अलंकार - प्रथम

लिखित - १५०

१. पाठ्यक्रम के (अलंकार प्रथम वर्ष) सभी रागों का विस्तृत विवरण। उनके सम्बन्ध में उपलब्ध मतभेदों की चर्चा। समप्रकृति रागों का तुलनात्मक अध्ययन। रागों के लक्षण तथा रागों में स्वरलगाव का महत्त्व।

२. बन्दिशोंकी स्वरलिपी को लिखने की क्षमता।

३. भारतीय संगीत में स्वरलिपी पद्धतियों का इतिहास तथा उनकी तुलनात्मक आलोचना।

४. संगीत के विभिन्न गीत प्रकार तथा वादन शैलियों का समुचित ज्ञान।

५. राग की गायकी में श्रुतियों का तथा कणस्वर का महत्त्व।

६. ध्वनि की उत्पत्ति, वहन, ग्रहण और गुण।

७. ध्वनि की गति निकालने की विधि।

८. स्वरांतर, स्वर-संवाद, षड्ज-पंचम भाव की जानकारी।

९. स्वरसप्तक का विकास।

१०. तानपुरे का सिद्धान्त, सहायक नाद, तानपुरा मिलाने की विविध पद्धतियाँ, उनका विश्लेषण।

संगीत अलंकार पूर्ण - गायन - वादन

पूर्णांक - ५०० **क्रियात्मक - ३५०** **लिखित - १५०**

१. **विस्तृत अध्ययन के राग -** १) श्री २) गौड - मल्हार ३) बहार ४) मारवा ५) गोरख कल्याण ६) अहिरभैरव ७) नन्द ८) विलास खानी तोडी ९) कोमल रिषभ आसावरी १०) देसी ११) भटियार १२) देसकार

२. **साधारण ज्ञान के राग -** १) गौरी (तीव्र मध्यम) २) मधमाद सारंग ३) मधुवंती ४) मालगुंजी ५) जोगकंस ६) खंबावती ७) बिहागडा ८) सरफरदा बिलावल ९) कुकुभ बिलावल १०) जयंत मल्हार ११) रामदासी मल्हार

३. मंच प्रदर्शन के लिए विस्तृत अध्ययन के रागोंमें से एक राग चुनकर विलंबित और द्रुत रचना के साथ पूर्ण विस्तार करते हुए, एक राग ३० से ४५ मि तक प्रस्तुत करना होगा ।

४. वृंदवादन, वृंदगायन, नृत्य, नाट्य आदि के लिए उपयुक्त स्वर-रचना तथा स्वरलिपी में लिखने की क्षमता अपेक्षित है ।

५. उत्तर हिंदुस्थानी एवं कर्नाटक संगीत का तुलनात्मक अध्ययन ।

६. संगीत तथा अन्य ललित कलाओं का परस्पर संबंध ।

७. संगीत में स्वरसाधना का महत्व तथा आवाज साधना शास्त्र का अध्ययन ।

प्रथम प्रश्न

१. पाठ्यक्रम के सभी रागोंका विस्तृत विवरण ।तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन।

२. हिंदुस्थानी तथा कर्नाटक संगीत का तुलनात्मक अध्ययन ।

३. संगीत अविष्कार के आधुनिक प्रकार जैसे पार्श्वसंगीत, पार्श्वकंठ संगीत, वृंदवादन, वृंदगायन, समूहगान, संगीतिका, चित्रसंगीत इनका विवरण ।

४. काव्यरचना स्वरबद्ध करना । प्रसंगानुरूप उचित राग एवं ताल में स्वरबद्ध करना तथा उसका विस्तृत अध्ययन एवं विवेचन करना ।

द्वितीय प्रश्न

१. नवरागनिर्मिती के संबंध में अध्ययन ।

२. घराना उसका स्वरूप, ऐतिहासिक जानकारी, घरानों के प्रमुख कलाकारों की गायकी की समालोचना ।

३. मिश्र राग निर्मिती संबंधी तात्त्विक चर्चा ।

४. आवाज साधना शास्त्र तथा उसके तंत्र का अध्ययन ।

५. संगीत साहित्य, संगीत - नाट्यकला, संगीत - नृत्यकला के संबंधमें विवेचन ।

६. राग - रस, राग - समय के संबंध में अध्ययन निम्मलिखित पुस्तकों की सहायता ले सकते है ।

१. संगीत शास्त्र लेखक - श्री वसंत राजोपाध्ये
२. संगीत शास्त्र लेखक - श्री महेश नारायण सक्सेना
३. श्रुती शास्त्र - श्री. बा. ग. आचरेकर

प्रारंभिक तबला

पूर्णांक - ५० **क्रियात्मक - ४०** **मौखिक - १०**

१. तबले पर बजनेवाले प्राथमिक स्वतंत्र वर्णों के वादन का समुचित ज्ञान ।

धा, धीं, ता, ना तिं, कत्, तू, गे आदि ।

२. तीनताल, झपताल, रुपक, दादरा, केहरवा आदि ताल बजाने की क्षमता ।

३. उपर्युक्त ताल हाथ से ताली, खाली दिखाकर बोलने की क्षमता ।

४. निम्नलिखित शब्दोंकी परिभाषा :

सम, काल, खंड, मात्रा, लय, टाळी, आवर्तन, संगीत ।

प्रवेशिका प्रथम - तबला

पूर्णांक - १०० **क्रियात्मक – ७५** **मौखिक- २५**

१. विलंबित, मध्य एवं द्रुत लय पहचाननेकी क्षमता ।

२. तीनताल, रुपक, झपताल, दादरा, एवं केहरवा इन तालोंके ठेके तथा ठाह - दुगुन बजाने की क्षमता ।

३. तीनताल में विस्तार :

तिरकिट, तिट, त्रक ये वर्ण तथा इन बोलोंसे युक्त कायदा ।

४. निम्नलिखित शब्दोंकी परिभाषा :-

नाद, स्वर, संगीत, टुकड़ा, मुखड़ा ।

५. प्रारंभिक परीक्षाका पूरा पाठ्यक्रम ।

प्रवेशिका पूर्ण – तबला

पूर्णांक - १५० **क्रियात्मक –१००** **लिखित - ५०**

१. प्रवेशिका प्रथम वर्ष का पूरा अध्ययन ।

२. तेवरा, चौताल, इन तालोंको पखावज शैली से एकगुन तथा दुगुन बजाने की क्षमता ।

३. रुपक, दीपचंदी, धुमाळी तथा द्रुत एकताल इन तालोंके दुगुन में बजानेका अध्ययन एवं क्षमता ।

४. निम्नलिखित तालोंमे विस्तार :-

अ) तीनताल : एवं झपताल में :-

तिट, तिरकिट एवं त्रक वर्णोसे युक्त एक तथा दो कायदे, दो पलटोसहित बजाना ।

५. दादरा एवं केहरवा इन तालोंमे एक - दो लग्गियाँ एकगुन तथा दुगुन लय में बजाने की एवं हाथ से ताली देकर बोलने की क्षमता ।

तबला - लिखित

१. पाठ्यक्रम में आए हुऐ सभी तालोंको ताल लिपी में लिपिबद्ध करनेकी क्षमता।

२. बडा ख्याल, छोटा ख्याल एवं तराना इन गायन शैलियोंकी जानकारी तथा संगत मे बजनेवाले तालोंकी जानकारी।

३. निम्नलिखित परिभाषा :

गत, चतस्त्र, तिस्त्र, लग्गी, कायदा, रेला एवं मोहरा ।

४. तीनताल तथा झपताल में एक कायदा ताल लिपी में लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

५. पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर तथा पं. विष्णु नारायण भातखंडे ताल लिपी पद्धतियोंका संपूर्ण अध्ययन ।

६. तबलेपर एवं डग्गेपर बजनेवाले वर्णों की जानकारी ।

मध्यमा प्रथम - तबला

पूर्णांक - २००　　क्रियात्मक — १००　　लिखित - १००

१. पखावज वादन शैलियों के अनुसार तेवरा तथा चौताल इन तालोंको एकगुन, दुगुन एवं चौगुन लय में बजाने की क्षमता ।

२. पाठ्यक्रम में अबतक आए हुएं सभी तालोंको एकगुन, दुगुन, चौगुन लय में बजाना तथा हाथ से ताली देकर बोलने की क्षमता ।

३. निम्नलिखित तालोंको मात्रा तथा खंड के अनुसार बजाने की क्षमता । उनकी शास्त्रीय जानकारी एवं उपयुक्तता बताने की क्षमता ।

४. दिल्ली, बनारस एवं फरुखाबाद इन घरानों के कायदे, चार पलटों सहित तीनताल तथा झपताल में बजाने की क्षमता।

५. तीनताल, झपताल एवं रुपक इन तालोंमें बेदम और दमदार तिहाई बजाने की क्षमता ।

६. तीनताल, झपताल में निम्नलिखित के अनुसार एकल वादन :- (सोलोवादन)

५ मिनिट कायदा, गत, छोटा टुकडा, आदी ।

७. तबला के घराने और उनकी वादन विशेषता तथा विभिन्न बाज के अनुसार वादन करने तथा जानकारी देने की क्षमता।

८. सभी गायन शैलियों को संगत करना ।

९. विभिन्न लय में बोलोंको बजाने की क्षमता ।

मध्यमा प्रथम - लिखित

१. विभिन्न कायदे विभिन्न तालोंमें लिपीबद्ध करना तथा तिलवाडा, झपताल, एवं चौताल लिपिबद्ध करने की क्षमता ।

२. पं. भातखंडे एवं पं. पलुस्करताललिपी पद्धतियोंका संपूर्ण ज्ञान ।

३. तबला के दशप्राण ।

४. तबला के घराने एवं उनकी वादन शैली के बारे में जानकारी ।

५. तबला - पखावज इनका आकार, स्वरुप, साम्य एवं भेद तथा तुलनात्मक अध्ययन ।

६. तबला - डग्गा इनका रेखाचित्र एवं भागों की जानकारी ।

७. बेदम तिहाई, दमदार तिहाई, चक्रदार थे वादन प्रकार परिभाषिक संज्ञा में लिखने की क्षमता ।

८. तबला के घराने एवं उनके वादकोंका परिचय ।

९. कुछ तालों में से साम्य तथा भेद सारणी में लिखने की क्षमता ।

१०. सम, ताली, काल एवं खंड इनका ताल में महत्त्व बताना ।

मध्यमा पूर्ण - तबला

पूर्णांक - २०० **क्रियात्मक - १००** **लिखित – १००**

१. विभिन्न लय में मूल लय पकड़कर आड, कुआड, दुगुन तथा चौगुन करके वापस पहली लय पर आनेकी क्षमता।

२. तिलवाडा, झुमरा, पंजाबी इन तालोंको उनके खंड के अनुसार विलंबित लय में बजाकर उनमें टुकड़ा, मुखड़ा बजाकर समपर आना ।

३. अभी तक पाठ्यक्रम में आए हुए सभी ताल किस गायन शैलीमें, कौनसी लय में बजाते है एवं उनका उपयोग कैसा होता है इसका प्रात्यक्षिक करके बताना।

४. विलंबित लय में टुकड़ा और मुखड़ा बजाने की क्षमता ।

तीनताल, झपताल में ठेका पकडते हुएं कायदा पढंत करना तथा उसका विस्तार हाथ से ताली देकर बोलने की क्षमता ।

५. दिल्ली, बनारस तथा फरुखाबाद घराने का कायदा दुगुन, चौगुन लय में बजाने की क्षमता ।

६. तिरकिट, धीरधीर, दिंग, तक यह वर्ण लेकर कायदा तीन, चार पलटोंसहित, गत तथा तिहाई बजाने की क्षमता।

७. तीनताल, झपताल में लेहराके साथ १५ मिनिट पेशकार, कायदा, गत, गत टुकडा इस तरह सोलो वादन करने की क्षमता ।

८. सभी गायन शैलियोंमें लय तथा सम पहचानकर संगत करना ।

९. लिखे हुए बोलोंको पढना तथा बजाना ।

मध्यमा पूर्ण – लिखित

१. किसी दो घरानोंके कायदे (एक-एक) ताल लिपी में लिपिबद्ध करना और उसमें लिपीकी जानकारी आवश्यक ।

२. तबला के घराने तथा बाज इनके वादनशैली की विस्तार रुप से जानकारी ।

३. तबले के दशप्राणोंकी विस्तार रुप में जानकारी ।

४. पेशकार, कायदा, रौ, गत, गतपरत, जाती, ग्रह, तिपल्ली, इनकी परिभाषायुक्त जानकारी ।

५. विभिन्न तालोंमें तिहाई बनाना एवं लिपिबद्ध करना ।

६. निम्नलिखित गायन शैलियोंकी जानकारी ।

ख्याल, तराना, भजन, दादरा, धृपद.

७. अबतक आए हुए वर्णोको बजाते समय तबला, डग्गा, चाट, लव, थाप, स्याही इनकी उपयुक्तता लिखना ।

८. आप जिसे घराने का तबला सिखते है, उसकी जानकारी एवं उनमें से प्रसिद्ध वादकों का परिचय ।

९. 'ताल' इस विषयपर अपनी राय लिखे।

विशारद प्रथम - तबला

पूर्णांक - २५० **क्रियात्मक - १५०** **लिखित - १००**

१. निम्नलिखित तालोंमे विस्तार :

तीनताल, झपताल एकताल में दस मिनट पेशकार से चक्रदार तक वादन करना ।

२. भावगीत, ठुमरी, दादरा एवं ख्याल गायन शैलियों को संगत करने की क्षमता।

३. तीनताल तथा झपताल में जाती प्रकार से वादन करना । उदा. गोपुच्छ, पिपीलीका, मृदुंगा, स्त्रोतावत इनके लक्षण बताकर गत, चलन तथा कायदा विस्तार से बजाने की क्षमता ।

४. नृत्य के साथ संगत करते समय जिस वर्णो के नाम बदलते है उन वर्णो के बोल बजाने की क्षमता ।

५. किसी एक कायदे का निकास बताकर वादन करना ।

६. घिडनग, क्डान्, दिंगदीनागिन आदी बोलोसें युक्त कायदा गत बजाना ।

लिखित

१. एकही वर्ण के कायदे विभिन्न तालोंमें लिखने की क्षमता ।

२. एक कायदा लिखकर उसके निकास की जगह दिखाकरताललिपी में लिपीबद्ध करना ।

३. अभी तक आए हुए जुडे हुए अक्षरों के नाम एवं वादन करते समय उनके नियमों की जानकारी बताना ।

४. ग्रह (सम, विषम, अतीत, अनाघात), पेशकार, चक्रदार, टुकडा, नौ हक्का (बेदम, दमदार) तथा लग्गी इनका संपूर्ण ज्ञान तथा परिभाषा ।

५. आपके पसंद का एक कायदा उसके लक्षण बताकर लिखनेकी क्षमता ।

विशारद पूर्ण - तबला

पूर्णांक - २५० **क्रियात्मक - १५०** **लिखित - १००**

१. लय का संपूर्ण ज्ञान ।

२. अतिविलंबित और अतिद्दत लय में विभिन्न ठेके बजाने की क्षमता।

३. तीनताल, झपताल, एकताल, रुपक, पंचमसवारी, झुमरा, आडाचौताल, सुरफाक्ता, धमार, रूद्र, ब्रम्हताल, लक्ष्मीताल में दस मिनट वादन करने की क्षमता ।

४. एक ही घराने का एक ही कायदा विभिन्न तालों मे हाथ से ताली देकर बजाने की क्षमता ।

५. विभिन्न घरानों की जानकारी तथा उनके वादन शैली सहित बजाने की एवं उनमें से भेद स्पष्ट करने की क्षमता।

६. आप जिस घराने से सिखते है, उसके गत कायदा एवं चक्रदार बजाने की क्षमता।

७. बाँये से शुरु होने वाले कुछ कायदे बजानेकी क्षमता रखना ।

८. किसी एक अनवट (अप्रचलीत) ताल में वादन करने की क्षमता । उदा. शिखरताल, पश्तो, फरदोस्त, रसिक, विचित्रताल, एवं मत्तताल ।

९. पखावज बजाने का साधारण ज्ञान ।

लिखित

१. कुआड, बिआड, फरमाईशी, चीजा, $1\frac{1}{4}$ गुन इनकी विस्तार से जानकारी।

२. विभिन्न धनवाद्योंका साधारण ज्ञान होना, तथा उनके प्रचलीत ताल लिपिबद्ध करने का अध्ययन ।

३. दिल्ली, पंजाब एवं बनारस इन घरानोंकी शैली तथा लक्षण ।

४. तबला एवं पखावज में अंतर एवं वादन करते समय आनेवाले नियम लिखनेका अभ्यास ।

५. निम्नलिखित विषय पर निबंधः

१. संगीत में ताल का महत्व

२. ताल में सम, काल, ताली का महत्व तथा उद्देश।

३.ताललिपी के लिए सर्वश्रेष्ठ पद्धती ।

४. सामान्य लोगोंपर ताल का पड़नेवाला प्रभाव ।

५. पाश्चात्य संगीत में तालका स्थान तथा उसके साधन ।

६. प्रमुख घनवाद्योंकी शैली तथा लक्षण ।

७. घनवाद्योंका इतिहास ।

८. ताल का सौंदर्यशास्त्र, लय एवं लयकारी ।

कथ्थक

प्रारंभिक

पूर्णांक - ५० **क्रियात्मक - ४०** **मौखिक - १०**

शास्त्र -

१. तीनताल का परिचय ।

२. कथ्थक नृत्य का परिचय (पाँच वाक्यों में)

३. खुद का, संस्थाका और गुरू का परिचय (पाँच वाक्यों में)।

४. परिभाषाएँ : लय, विलंबित लय, मध्यलय, द्रुतलय, मात्रा, सम, ताली, खाली, विभाग और तिहाई ।

क्रियात्मक -

१. तीनताल का परिचय ।

२. तीनताल में तत्कार बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित ।

३. तीनताल में ६ सादे तोडे, २ चक्करदार तोडे, २ तिहाई ।

४. तीनताल के ठेके की ताल लगाना ।

५. तीनताल के गिनती से ठाह, दुगुन, चौगुन हाथ से ताल लगाना ।

६. सभी रचनाओं की पढन्त आवश्यक ।

प्रवेशिका प्रथम - कथ्थक

पूर्णांक - १०० **क्रियात्मक - ७५** **मौखिक - २५**

(प्रारंभिक के पाठ्यक्रम को दोहाराना)

शास्त्र -

१. लय (बराबर, दुगुन, चौगुन) सम, मात्रा, ताली, खाली, गतनिकास, तत्कार, तोडा, गतपलटा, तथा बाँट इन शब्दों की परिभाषा व्यक्त कराना ।

२. काललिपी के चिन्होंको पहचानना ।

३. दादरा तथा केहरवा की जानकारी ।

४. पाँच वर्तमान कथक गुरूओं के नाम ।

५. अभिनय दर्पण के अनुसार निम्नलिखित असंयुक्त हस्तमुद्राएँ तथा उनका प्रयोगः-

१. पताका	२. त्रिपताका	३. अर्धपताका	
४. कर्तरिमुख	५. मयूर	६. अर्धचंद्र	
७. अराल	८. शुकतुण्ड	९. मुष्टि	१०. शिखर

क्रियात्मक -

• तीनताल -	रंगमंच प्रणाम	१
	ठाठ	२
	सादा आमद	१
	तोडे	६
	चक्करदार तोडे	२
	परन	२

• गतनिकास

१. सीधी गत, मटकी गत, बाँसुरी गत ।

२. तत्कार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित ।

३. हाथ से ताल लगाते हुए सभी तोडों का अभ्यास ।

४. तीन ताल के ठेके को ताल सहित ठाह, दुगुन, चौगुन में पढ़ना ।

५. तीन ताल में ४ तत्कार के बाँट ।

केहरवा या दादरा ताल में एक अभिनय गीत जिसके बोल मुखाग्र हो ।

प्रवेशिका पूर्ण - कथ्थक

पूर्णाक - १५० **क्रियात्मक - १००** **लिखित - ५०**

लिखित -

१. कथ्थक नृत्य का संक्षिप्त इतिहास (१० ते १५ वाक्यों में)

२. आमद, तोडा, टुकडा, तत्कार, परन, चक्करदार, कवित्त, तिहाई, अंग, प्रत्यंग, उपांग, गतभाव, हस्तमुद्रा आदि की परिभाषा उदाहरण सहित ।

३. अ) लोकनृत्य की परिभाषा तथा पाँच प्रादेशिक लोकनृत्यों के नाम जानना ।

ब) सात शास्त्रीय नृत्यशैलियों के नाम उनके प्रांत सहित ।

४. **असंयुक्त हस्तमुद्राएँ - प्रयोग (अभिनय दर्पण से)**

११. कपित्थ	१२. कटकामुख
१३. सूचि	१४. चंद्रकला
१५. पद्मकोष	१६. सर्पशीर्ष
१७. मृगशीर्ष	१८. सिंहमुख
१९. कांगुल	२०. अलपद्म
२१. चतुर	२२. भ्रमर
२३. हंसास्य	२४. हंसपक्ष
२५. संदंश	२६. मुकुल
२७. ताम्रचूड	२८. त्रिशूल

५. किसी प्रसिध्द कथक कलाकार की जीवनी । (१० वाक्यों में)

६. वर्तमान पाँच तबला वादकों के नाम, जो कथ्थक नृत्यकी संगत करते हो ।

७. क) लिपीबध्द : तीन ताल में एक तिहाई, एक साधारण आमद (ताथईततथई), एक परन जुडी आमद, एक तोडा, एक परन, एक कवित्त ।

ख) झपताल में ठेके की ठाह (बराबर), दुगुन, एक तिहाई, एक तोडा, एक सादा आमद, एक परन ।

ग) दादरा तथा केहरवा ताल के ठेके को ताल चिन्ह सहित लिखना ।

क्रियात्मक

- तीनताल

२	ठाठ	१	परन जुडी आमद
१	रंगमंच प्रणाम	४	तोडे (कमसे कम ३ आवृत्ती)
२	परन	२	चक्करदार परन
१	कवित्त	१	चक्करदार तिहाई

त्रिताल में आधी, बराबर, दुगुन, चौगुन, अठगुन तिहाई सहित

त्रिताल मे बाँट तिहाई सहित

गतनिकास - मोरमुकुट, घूँगट, बाँसुरी

गतभाव - राधा का पानी भरने जाना, कृष्ण का कंकर से मटकी फोड़ना, राधा का रूष्ट होना, कृष्ण का हसना आदि, गतभाव में दिखाई गयी हस्तमुद्राओं के नाम

- झपताल

१ ठाठ	१ आमद
१ तिहाई	२ तोडे
१ चक्करदार तोडा	१ परन

तत्कार बराबर, दुगुन तिहाई सहित ।
सभी बोलों को हाथ से ताली देकर पढना आवश्यक है ।

मध्यमा प्रथम - कथ्थक

पूर्णांक - २०० **क्रियात्मक - १००** **लिखित - १००**

लिखित -

१. प्रारंभिक से प्रवेशिका पूर्ण तक के सभी शब्दों की जानकारी ।
२. नर्तन के भेद- नृत्त, नाट्य, नृत्य की परिभाषा ।
३. लास्य तथा ताण्डव की केवल परिभाषा ।
४. अभिनय दर्पणानुसर ग्रीवा भेद । (४ प्रकार)
५. अभिनय दर्पणानुसार नऊ प्रकार के शिरोभेद ।
६. लोक - नृत्य तथा आधुनिक नृत्य की परिभाषा ।
७. जीवनियाँ - पं. कालिका प्रसाद, पं. बिंदादिन महाराज, पं. हरिहर प्रसाद, पं. हनुमान प्रसाद ।
८. जयपूर तथा लखनऊ घराने की विशेषता ।
९. संयुक्त हस्तमुद्राएँ (अभिनयदर्पणानुसार)
परिभाषा और प्रयोग

१. अंजलि	२. कपोत	३. कर्कट
४. स्वस्तिक	५. डोला	६. पुष्टपुट
७. उत्संग	८. शिवलिंग	९. कटकावर्धन
१०. कर्तरी स्वस्तिक	११. शकट	१२. शंख

१०. तीनताल, झपताल, एकताल के पाठ्यक्रमकी रचनाओं को लिपिबध्द करना ।
११. गतभाव के प्रसंगों का वर्णन लिखना ।
१२. संत कवि सूरदास तथा मीरा का परिचय ।

क्रियात्मक

१. तीनताल में विशेष योग्यता

- गुरूवंदना
- तीन ठाठ (तीन अलग Poses)
- दो आमद (१ साधा + १ परणजुडी)
- तीन चक्करदार तोडे जो ४ आवृत्तिसे कम ना हो ।
- तीन परन (१ तिश्र जाति परन आवश्यक)
- तीन चक्करदार परन
- दो कवित्त
- तीन गिनती की तिहाई
- तत्कार में आधी, बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, आठगुन करना तथा बाँट या चलन का विस्तार कराना ।

झपताल

१. दो ठाठ २. एक परन जुडी आमद ३. एक सलामी
४. तीन सादे तोडे (तीन आवृत्तिसे अधिक आवर्तनोंके हो)
५. दो चक्करदार तोडे ६. दो परन ७. दो चक्करदार परन
८. एक कवित्त ९. तीन तिहाई
१०. तत्कार की बराबर, दुगुन, चौगुन, तिहाई सहित

एकताल

१. एक ठाठ २. एक आमद ३. एक चक्करदार तोडो ४. दो तोडे
५. एक परन ६. एक चक्करदार परन ७. एक तिहाई
८. तत्कार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित ।

तीनताल में

१. गतनिकास की विशेषता - झूमर (झूमर - घुंगरू युक्त माथे का बिंदी जैसा माँग का गहना) कलाई।
२. मटकी उठाने के तीन प्रकार
३. गतभाव : माखनचोरी
४. अभिनयपक्षमें - एक भजन अथवा भक्तिरस के आधारपर गीत या पद पर अभिनय (भावप्रस्तुति)

मध्यमा पूर्ण - कथ्थक

पूर्णांक - २०० क्रियात्मक - १०० लिखित - १००

लिखित -

१. कथ्थक नृत्य की मंदिर परंपरा और दरबार परंपरा का संपूर्ण ज्ञान।
२. बनारस घराने की विशेषताएँ।
३. जयपूर, लखनौ घराने की संपूर्ण परंपरा का ज्ञान (वंशपरंपरासहित)
४. भौ संचालन तथा दृष्टि भेद के प्रकार और उनका प्रयोग (अभिनव दर्पणानुसार)
५. लास्य तथा ताण्डव की व्याख्या तथा उनके प्रकार ।
६. तीनताल के ठेके को आधी १/२, पौनी ३/४, कुआडी १ १/४ आडी १ १/२ (डेढी), बिआडी १ ३/४ (पौने दो) लय में लिपीबध्द करना ।
७. क) अभिनय की स्पष्ट परिभाषा ।
ख) आंगिक- अभिनय, वाचिक- अभिनय, आहार्य - अभिनय, सात्विक - अभिनय की व्याख्या तथा प्रयोग ।
८. संयुक्त हस्त की निम्नलिखित मुद्राओं की परिभाषा तथा प्रयोग : चक्र, सम्पुट, पाश, कीलक, मत्स्य, कूर्म, वराह, गरूड, नागबन्ध, खटवा, भेरूण्ड
९. जीवनियाँ :- पं. अच्छन महाराज, पं. शंभू महाराज, पं. लच्छु महाराज, पं. नारायण प्रसाद, पं. जयलाल ।
१०. तीनताल, रुपक तथा धमार के सभी बोलों की लिपिबध्द क्रिया ।
११. कथ्थक नृत्य के अध्ययन की शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक उपयोगिता ।

क्रियात्मक :

श्री शिव वंदना अथवा श्रीकृष्ण वंदना

१. तीनतालमें विशेषताओं सहित :
एक उठान, एक ठाठ, एक आमद, एक परमेलू, एक नटवरी तोडा, एक फर्माइशी चक्रदार (पहली धा पहले, दुसरी धा दुसरे, तथा तिसरी धा तिसरे समपर), एक गणेश परन, एक तत्कार की लडी । (तकिट तकिट धिन)

२. रूपक

एक ठाठ — एक सादा आमद

चार सादे तोडे — दो चक्रदार तोडे

दो परन — दो चक्रदार परन

दो तिहाई — एक कवित्त

तत्कार - बराबर, दुगुन, चौगुन, तिहाई सहित ।

३. एकताल

दो ठाठ — एक परन जुडी आमद

चार तोडे — दो चक्रदार तोडे

दो परन — दो चक्रदार परन

तीन तिहाई — एक कवित्त

तत्कार - बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, तिहाई सहित ।

४. सीखे हुए सभी बोलोंकी ताल देकर पढन्त करना ।

५. गतनिकास में विशेषता : रूखसार, छेडछाड, आँचल आदि

६. गतभाव में - कालिया दमन ।

७. 'होरी' पद पर भाव प्रस्तुति ।

विशारद प्रथम - कथ्थक

पूर्णांक - २५० **क्रियात्मक - १५०** **लिखित - १००**

लिखित

१. नाट्य की उत्पत्ति (भरतानुसार) नाट्य का प्रयोग तथा नाट्य का प्रयोजन।

२. नवरसों की परिभाषा ।

३. नायक के चार भेद : धीरोद्धत, धीरललित, धीरोदात्त, धीरप्रशांत ।

४. चार प्रकार की नायिका और उनकी परिभाषा : अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका

५. दशावतार में से मत्स्य, वराह, कूर्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्राएँ ।

६. ताल के दस प्राणों की व्याख्या ।

७. भरतनाट्यम्, मणिपूरी तथा कथकली नृत्य की जानकारी । इनकी वेशभूषा तथा वाद्यों का ज्ञान ।

८. तीनताल, झपताल, धमार में आमद, बेदम तिहाई, फरमाईशी परन तथा चक्करदार परन, तिपल्ली तथा कवित्त को लिपीबध्द करना ।

९. अ) गुरूशिष्य परंपरा का महत्व ।
ब) शिष्य के गुण तथा गुरू के प्रति उसका कर्तव्य ।

१०. रस की निष्पत्ति, स्थाई भाव, भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव आदि की परिभाषा ।

११. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान:
तिपल्ली, कवित्त, फरमाईशी परन, कमाली परन, बेदम तिहाई, त्रिभंग, सुढंग, लागडाँट, अनुलोम, प्रतिलोम, भ्रमरी, न्यास - विन्यास ।

१२. कथक नृत्य में प्रयुक्त होनेवाले निम्नलिखित गीतप्रकारोंकी व्याख्या :
अष्टपदी, ध्रुपद, ठुमरी, चतुरंग, त्रिवट, तराना, चैती, कजरी, होरी ।

१३. कथ्थक नृत्य में नवाब वाजिद अली शाह तथा रायगढ के महाराज चक्रधर सिंह का योगदान ।

१४. रास ताल (१३), धमार (१४), गजझंपा (१५), पंचम सवारी (१५) में आमद, तिहाई तोडा, चक्करदार परन तथा कवित्त आदि को लिपिबध्द करना।

६. जीवनियाँ : नटराज गोपीकृष्ण, कथ्थक सम्राज्ञी सितारादेवी, पंडित दुर्गालाल व गुरू कुन्दनलाल गंगानी ।
७. निबन्ध ज्ञान : १. रास तथा कथ्थक
२. ठुमरी का कथ्थक नृत्य से सम्बनध
८. नर्तक / नर्तकी के गुण और दोष ।

क्रियात्मक :

१. सरस्वती वंदना ।
२. तीनताल में अतिरिक्त झपताल में विशेष तैय्यारी ।
३. गजझंपा या छोटी सवारी (पंचम सवारी) तथा रास और धमार में ठेके की ठाह, दुगुन, ठाठ, आमद, दो तोडे, एक परन, तथा कवित्त का प्रदर्शन ।
४. गतनिकास : आँचल, नाव, घूँघट के प्रकार ।
गतभाव : पिछले वर्षों के सभी गतभावों का प्रदर्शन तथा द्रौपदी चीर हरण।
५. ठुमरी भाव (शब्द, राग, ताल की जानकारी आवश्यक) ।
६. एक तराना या त्रिवट किसी ताल में ।
७. हाथ से ताली लगाकर सभी बोलों की पढन्त ।
८. अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा, तथा प्रोषितपतिका नायिका पर गतभाव या इनसे संबधित पद या ठुमरी पर भावनृत्य ।
९. तीनताल या झपताल की तत्कार में लडी या चलन ।
१०. अभिनय दर्पण का श्लोक "आंगिकं भुवनं यस्य ..."
११. पिछले संतकवियों के छोडकर अन्य किन्ही दो संत कवियों के कविता या भजन पर भाव दिखाना तथा दोनों संत कवियों का परिचय देना ।

मंचप्रदर्शन - स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (२० से ३० मिनिट)

विशारद पूर्ण - कथ्थक

पूर्णांक - ४०० **क्रियात्मक - २५०** **शास्त्र - १५०**

लिखित -

१. प्राचीन नृत्यसम्बन्धी घटनाओं की जानकारी ।
२. मध्य युगीन ग्रंथोंकी जानकारी ।
३. नवरसों का पूर्ण ज्ञान ।
४. नायिका भेद का विस्तृत ज्ञान ।
क) धर्म भेद से नायिका, स्वकीया, परकीया, सामान्या ।
ख) आयु विचार से नायिका, मुग्धा, मध्या, प्रौढा ।
ग) प्रकृति अनुसार नायिका, उत्तमा, मध्यमा, अधमा ।
घ) जाति भेद से नायिका, पद्मिनी, चित्रणी, शंखिनी, और हस्तिनी ।
ड) परिस्थिती अनुसार अष्ट नायिकाओं में से कलहान्तरिता, वासकसज्ञा, विरहोत्कंठिता, स्वाधीनपतिका ।
५. ओडिसी, कुचिपुडी तथा मोहिनीअट्टम नृत्य की व्याख्या तथा वाद्यों व वस्त्रों की जानकारी ।
६. लय और ताल का उद्गम तथा कथ्थक नृत्य में महत्व ।
७. नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त और असंयुक्त मुद्राओं का तौलनिक अभ्यास ।
८. छोटी सवारी (१५), शिखर (१७) में आमद, तिहाई, तोडा, परन आदि को लिपिबध्द कराना ।
९. रामायण, महाभारत, भागवत पुराण तथा गीतगोविंद की संक्षेप में जानकारी।
१०. निम्नलिखित पात्रों की मुद्राएँ (अभिनय दर्पणानुसार)
ब्रम्हा, विष्णु, सरस्वती, पार्वती, लक्ष्मी, इन्द्र, अग्नि, यम, वरूण, वायु तथा दशावतार सम्बन्धी (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण, कल्कि)
११. पौराणिक साहित्य में नृत्य के संदर्भ ।
१२. जीवनियाँ - गुरू सुंदरप्रसाद, गुरू मोहनराव कल्याणपूरकर, महाराज कृष्णकुमार, पं. बिरजू महाराज
१३. नृत्य में लोकधर्मी तथा नाट्यधर्मी की परिभाषा तथा प्रयोग ।
१४. विदेशों में भारतीय नृत्यकला की लोकप्रियता ।

१५. आधुनिक काल के नृत्य में विकसित होनेवाले नये तकनीक तथा उनका स्वरूप (ध्वनि संयोजन, प्रकाश सज्ञा, नेपथ्य, सायक्लोरामा, स्लाईडस् आदि)

१६. कथ्थक नृत्य में कवित्त तथा ठुमरी का स्थान ।

१७. गायन, वादन, चित्रकला, मूर्तिकला तथा साहित्य का नृत्य से सम्बन्ध ।

१८. मत्त ताल (१८), रास ताल (१३) में आमद, तोडा, परन, चक्करदार तोडा, फरमाईशी परन, परमेलु, आदि ।

क्रियात्मक

१. विष्णुवंदना (राग, ताल तथा शब्दों की जानकारी)

२. छोटी सवारी (१५), शिखर (१७), मत्त ताल (१८), रास ताल (१३) में विशेष तैय्यारी ।

३. तीनताल, झपताल, रूपक, सादे ठेके पर नाचना ।

४. छोटी - छोटी कथाओं पर नृत्यनिर्मिती करना ।

५. तत्कार में बाँट, लड़ी, चलन का विस्तार आदि का प्रदर्शन ।

६. गतभाव में दक्षता, कांचनमृग (सीताहरण तक,) कंसवध । (कथा कहकर अभिनय अनिवार्य)

७. बैठकर ठुमरी या पद की पंक्ति पर अनेको प्रकारसे संचारी भाव का विस्तार करना।

८. सभी तालों की रचनाओं को ताल देकर पढ़ना ।

९. त्रिवट, तराना, चतुरंग, अष्टपदी, स्तुति आदि में से किन्ही दो का प्रदर्शन। (राग, ताल, शब्द - परिचय)

१०. नवरसों को बैठकर केवल चेहरे द्वारा व्यक्त करने की क्षमता ।

११. दशावतारों सम्बधी किसी रचना पर प्रदर्शन (रचनाकार, राग, ताल आदि का ज्ञान)

१२. तीनताल में लय के साथ भ्रुकुटी, ग्रीवा आदि का संचालन ।

१३. तीनताल का नगमा (लहरा) बजाने या गाने की क्षमता।

१४. परीक्षक द्वारा दिए गए प्रसंग को तुरन्त प्रस्तुत करना ।

१५. अष्ट नायिकोओं पर भाव प्रस्तुति ।

मंचप्रदर्शन - स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (२० से ३० मिनिट तक)

अलंकार प्रथम - कथ्थक

पूर्णांक - ५०० **क्रियात्मक - ३५०** **लिखित- १५०**

लिखित - प्रथम प्रश्न

१. वैदिक साहित्य में नृत्य के संदर्भ ।

२. पुरातत्व में नृत्य के संदर्भ ।

३. नाट्यशास्त्र में कथ्थक नृत्य से संबंधित भ्रमरी तथा चारिओं का प्रयोग।

४. किसी भी एक कथ्थक कलाकार की नृत्य प्रस्तुति की समीक्षा (समालोचना)

५. नाट्यशास्त्र और अभिनयदर्पण के अनुसार दृष्टि भेद ।

६. नृत्य शब्द की मूल धातु, उत्पत्ति और विकास ।

७. कथ्थक नृत्य प्रस्तुति पर आधुनिक तकनीक का प्रभाव ।

८. जाति का विस्तृत ज्ञान । तील ताल में स्पष्ट किजिए ।

९. झपताल के ठेके १/२, ३/४,१ १/४, १ १/२ लयमें लिपिबध्द करना ।

द्वितीय प्रश्न

१. कथ्थक नृत्य शैली के सौंदर्य शास्त्रीय सिध्दांत:

अ) लय ताल, ब) लालित्य

क) सौष्ठव का भाव ड) आकृतिबंध आदि

२. कथ्थक प्रदर्शन में वस्तुक्रम की विशेषता तथा त्रुटियाँ ।

३. नृत्य में तत, सुषिर, अवनद्ध तथा घन वाद्यों की उपयोगिता तथा जानकारी।

४. नौटंकी, तमाशा, नृत्यनाटिका, बैले तथा रासमण्डली की जानकारी ।

५. रास ताल (१३), लक्ष्मी ताल (१८), वसंत ताल (९) तथा अष्टमंगल (२२), मे ठेके की दुगुन, चौगुन

ख) उपरोक्त क) सभी तालों में ठाठ, आमद, तिहाई, तोडे, परन, चक्करदार परन, व कवित्त आदि को लिपिबध्द करना ।

६. कथ्थक नृत्यशैली के प्रस्तुतिकरण के अंतर्गत सांगीतिक विचार ।

७. कथ्थक नृत्य में संगति कलाकारों की भूमिका, आवश्यकता, महत्व ।

क्रियात्मक

१. कृष्ण वन्दना, शिववन्दना या गणेशवन्दना किसी एक पर नृत्य अभिनय। उपरोक्त रचना तालबद्ध या आलापमें होनी चाहिए ।

२. अपनी पसंद के ताल के अतिरिक्त रास, अष्टमंगल, बसंत या लक्ष्मी आदि में विशेष प्रदर्शन ।

३. नयी परनों का तुरन्त निर्माण करने की क्षमता ।

४. अ) नायक भेदो के गतभाव या पदपर तथा नायिका भेदों के पद अथवा ठुमरी पर भाव प्रस्तुत करना ।

ब) एक पंक्तिपर अनेक संचारी भाव बताना ।

किसी एक रस पर आधारित रचना प्रस्तुत करना ।

५. किसी एक रस पर आधिारित रचना प्रस्तुत कराना ।

६. आधुनिक कथा पर गतभाव प्रस्तुत करना या नृत्य नाटिका का रुप देना।

७. एक अष्टपदी तथा एक तराना प्रस्तुत करना ।

८. तत्कार में चलन, लडी तथा लयकारी का विस्तार ।

९. भिन्न- भिन्न जाति पर आधारित तिहाइयाँ जो तीन ताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में हो

१०. दमदार पढन्त का प्रदर्शन ।

११. परीक्षक द्वारा दिए गए मुखड़ेपर तुरंत तिहाई बनाना ।

१२. अभिनय द्वारा प्रस्तुत रचना के शब्दार्थ तथा भावार्थ का विवेचन ।

मंचप्रदर्शन : स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य

(३० मिनिटतक)

अलंकार पूर्ण - कथ्थक

पूर्णांक - ५०० **क्रियात्मक - ३५०** **लिखित - १५०**

लिखित - प्रथम प्रश्न

१. मंदिरो में नृत्य की प्राचीन परम्परा का इतिहास ।

२. नट, नर्तक, तौर्यत्रिकम् शब्दोंकी परिभाषा ।

३. कथ्थक नृत्य प्रस्तुति में संरचनाओं के नये प्रयोग और प्रवाह ।

४. आधुनिक रंग प्रस्तुति का तकनीकी ज्ञान - जैसे की रचना आलेख - संगीत संयोजक - नृत्य निर्देशक - वेशभूषा - रंगभूषा - नेपथ्य तथा प्रकाश सज्ञा आदि ।

५. नाट्यशास्त्रानुसार निम्नलिखित की व्याख्या :-

१. दर्शनविधी ८	२. भृकुटी भेद ७
३. अधर भेद ६	४. गरदन के प्रकार ९
५. हस्तमुद्रा के प्रकार ६४	६. वक्षस्थल के प्रकार ५
७. कमर के प्रकार ५	८. पांव के कार्य ५

६. नाट्यशास्त्र का उद्गम

७. भाव तथा रस का संबंध, भाव, विभाव, अनुभाव तथा सात्त्विक भाव का नृत्य में प्रयोग

८. संत सुरदास की किन्ही दो काव्य रचनाओं के आधार पर नृत्य के संदर्भ का विवेचन ।

९. किसी भी एक ताल में आमद, कमाली चक्करदार परन, फरमाईशी परन, तिहाई (जो २ आवृत्ति से कम ना हो) तिस्त्र जाति व मिस्त्र जाति परन या चक्करदार परन तथा कवित्त आदि की लिपिबद्ध क्रिया ।

द्वितीय प्रश्न

१. कथ्थक नृत्य के मुख्य तीन घरानों (लखनऊ, जयपूर, बनारस) की परम्पराओं की समालोचना ।

२. निम्नलिखित लयकारिओं को तीनताल, झपताल, रुपक, धमार, रास तथा शिखर में लिखना ।

३/४, १ १/२, १ ३/४, ४/५, ५/४

३. निम्नलिखित की विस्तारपूर्वक परिभाषा । स्तुति, आमद, सलामी, स्त्री ठाठ, पुरूष ठाठ, करण, चाल, कसक - मसक, हाव - भाव, तत्कार में रेला, पल्टा, बाँट, लडी - चलन, प्रमलू, फरमाईशी चक्करदार, ठुमरी, चतुरंग, अष्टपदी ।

४. ठुमरी शब्द का स्वरूप, उत्पत्ति तथा विकास ।

५. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबन्ध ।

सा:- लय, ताल और लयकारी की कथ्थक नृत्य में विशेषता ।

रे :- कथ्थक नृत्य की वेशभूषा के विभिन्न रूप ।

ग :. कृष्ण चरित्र का कथ्थक शैली पर प्रभाव ।

म :- कथ्थक नृत्य पर मुस्लिम सभ्यता का प्रभाव ।

प :- कथ्थक नृत्य में घुंगरू का महत्व ।

ध :- कथ्थक नृत्य में पढंत की विशेषता ।

६. निम्नलिखित तालों में आमद, तिहाई (२ आवृत्ति), तोडे, परन, चक्करदार परन, फरमाईशी परन, कवित्त, आदि ।

गणेश ताल (२१), रूद्रताल (११), अर्जुनताल (२४)

७. नाट्यशास्त्र के व्याख्याकारों का विवेचन ।

८. 'करण' क्या है ? १०८ करणों में से पहले १० करणों का नाम ।

क्रियात्मक

१. गणेशस्तुति, दुर्गास्तुति तथा रामस्तुति ।

२. अपनी पसंद के ताल के अतिरिक्त गणेश, रूद्र, अर्जुन, या अष्टमंगल में से किसी एक ताल में विशेष प्रदर्शन।

३. ध्रुपद या अष्टपदी में से किसी एक पर भाव नृत्य ।

४. गतभाव में दक्षता : द्रौपदी चीर हरण, रामायण से जटायु मोक्ष या किसी अन्य प्रसिध्द प्रसंग पर परीक्षकों की अनुमति से गतभाव प्रस्तुत करना ।

५. किसी प्रसिद्ध ठुमरी के अतिरिक्त परीक्षक द्वारा गाई जानेवाली ठुमरी का भी भाव दर्शन ।

६. रसों पर आधारित गतभाव या पद पर भाव

७. नायिका भेद पर विशेष अधिकार ।

८. अपनी कोई रचना ।

९. सभी तालों में पढ़न्त ताल सहित ।

१० स्वयं गा कर कोई रचना प्रस्तुत करना तथा तबले में बोलों को बजाना ।

११ छोटे बच्चों को सिखाने की क्षमता ।

मंचप्रदर्शन : स्वतंत्ररूपमें विधिवत् मंचप्रदर्शन अनिवार्य (३० मिनिटतक)

भरतनाट्यम्

प्रारंभिक

एकूण गुण - ५० **प्रात्यक्षिक - ४०** **तोंडी - १०**

प्रात्यक्षिक

१. नमस्कार - भरतनाट्यममधे नृत्याच्या सुरवातीला व शेवटी केल्या जाणाऱ्या नमस्काराचे अर्थासकट विश्लेषण करणे.

२. व्यायाम - शरीराच्या विविध अवयवांचे व्यायाम प्रकार करून दाखवणे. उदा. मान, डोके, हात, पाय, कंबर इ.

३. अडवू - भरतनाट्यमधील मूळ पदन्यास.

अ) तट्ट अडवू - तैय्या तै

ब) नट्ट अडवू - तैयुं तत् ता तैयुं ता

क) मेट्ट अडवू - तै तै ताम्

ड) तट्ट कुदित्त / कुदिच्चि मेट्ट अडवू - तत तै ता हा

प्रत्येक अडवूच्या समूहातील कमीत कमी पाच प्रकार विलंबित, मध्य, द्रुत लयीमध्ये करणे. सगळे अडवू चतुश्र जातीमध्ये म्हणणे.

तोंडी

१. असंयुक्त हस्त - अभिनय दर्पण

२. शिरोभेद - अभिनय दर्पण

दृष्टीभेद - अभिनय दर्पण

३. ग्रीवाभेद - अभिनय दर्पण

४. पाद भेद - नाट्य शास्त्र

५. चतुश्र जातीची हस्तक्रिया दाखवून त्यामधे चतुश्र जाती तीन लयीमधे म्हणणे.

६. नृत्यामध्ये वापरल्या जाणाऱ्या संज्ञांचा अर्थ स्पष्ट करणे.

अ) अडवू ब) लय क) ताल ड) भरतनाट्यम इ.

७. विद्यार्थ्याच्या गुरू व घराण्याचे नाव त्याबद्दल थोडक्यात माहिती.

८. भारतामधे प्रचलित चार मुख्य शास्त्रीय नृत्यशैली - भरतनाट्यम, कथक, मणिपुरी आणि कथकली त्याचबरोबर ओडिसी, मोहिनीअट्टम, कुचिपुडी याबद्दल थोडक्यात माहिती.

प्रवेशिका प्रथम - भरतनाट्यम्

एकूण गुण - १०० **प्रात्यक्षिक - ७५** **तोंडी - २५**

प्रात्यक्षिक

अडवू -

१. तिरमाणम अडवू - गि ण तों

२. मंडी अडवू - तत तै ता

३. सरक्क / सारिक अडवू - तै कत तै ही

४. विश्रु अडवू - ता तै तै ता

५. कुदित्त मेट्ट अडवू - तै हत तै ही

६. पेरी अडवू - तै कत तै ही

७. शिखर अडवू - तत् तै ता हा धित तै ता

प्रत्येक अडवूंच्या समूहातील ४ प्रकार तीन लयींमध्ये करून दाखविणे.

तोंडी -

१. असंयुक्त हस्त विनियोग - पताका ते मयूर त्यांच्या अर्थासहित करून दाखविणे.

२. संयुक्त हस्त - अभिनयदर्पण

३. मंडल भेद - अभिनयदर्पण

४. स्थानक भेद - अभिनय दर्पण

५. हस्त प्रचार - नाट्य शास्त्र

६. तीश्र जातीची हस्तक्रिया दाखवून ती तीनही लयीमध्ये म्हणणे.

७. खालील संज्ञाचे अर्थ स्पष्ट करा.

अ) मात्रा ब) आवर्तन क) जाती ड) सम

८. सर्व अडवू चतुश्र जातीमध्ये म्हणणे.

प्रवेशिका पूर्ण - भरतनाट्यम्

एकूण गुण - १५० **प्रात्यक्षिक - १००** **लेखी - ५०**

प्रात्यक्षिक

अडवू

अ) जाती अडवू - तै तें धता

ब) तट्टी मेट्टी अडवू - पाच जातीमधे करून दाखविणे.

क) तिरमाणम अडवू - तरि किट तोम

१. अलरिपू - तिश्र किंवा चतुश्र जाती. अलरिपू या शब्दाचा अर्थ सांगून तो तालामध्ये व्यवस्थित हस्तक्रियेसोबत म्हणणे.

२. पुष्पांजली - नाट किंवा कोणत्याही दुसऱ्या रागात पुष्पांजली शब्दाचा अर्थ सांगून त्याचा राग व ताल माहिती असणे आवश्यक

३. रूपक किंवा आदि तालामधील एखादा तिरमाणम् (जति) करून दाखवणे व त्याचे शोल्लु व अडवू तालामधे म्हणणे.

तोंडी

१. असंयुक्त हस्त विनियोग - अर्धचंद्र ते पद्मकोष

२. खंड व मिश्र जाति तीनही लयीमधे म्हणणे.

लेखी

१. व्याख्या-

१) अडवू	२) कोरवई	३) जती	४) तिरमाणम
५) चारी	६) भ्रमरी	७) उत्पलवन	८) मंडल
९) स्थानक	१०) लय	११) मात्रा	१२) ताल
१३) आवर्तन	१४) अंग	१५) सम	१६) उशी (off beat)

२. भरतनाट्यम या शास्त्रीय नृत्यशैलीची प्राथमिक माहिती

अ) उगमस्थान ब) वापरली जाणारी भाषा क) या तंत्राचे मुख्य वैशिष्टै

३. थोडक्यात स्पष्ट करा.

अ) नाट्यक्रम २) पात्रप्राण ३) पात्र लक्षण ४) सभा लक्षण

४. अलरिपू तालामधे लिहिणे.

मध्यमा प्रथम - भरतनाट्यम्

एकूण गुण - २०० **प्रात्यक्षिक - १००** **लेखी - १००**

प्रात्यक्षिक

१. जातिस्वरम - रचनेचा राग व ताल सांगून संपूर्ण रचना करून दाखवणे.

२. शब्दम - शब्दममधे येणाऱ्या संचारींचा अर्थ स्पष्ट करणे व संचारी ही संज्ञा स्पष्ट करणे.

३. अलरिपू - मिश्र जाती

तोंडी

१. तीश्र व चतुश्र जाती आदितालामधे म्हणणे.

२. असंयुक्त हस्त - सर्पशीर्ष ते त्रिशूल

३. शिकलेल्या कोणत्याही एका तिरमाणम्/ जातिचे तट्टकळीवर नटुवंगम करणे.

लेखी

१. व्याख्या लिहा

अ) अंग, प्रत्यंग, उपांग ब) तांडव, लास्य क) लोकधर्मी, नाट्यधर्मी

२. भरतनाट्यमची पूर्ण माहिती

अ) इतिहास ब) विकास क) नृत्याच्या प्रगतीसाठी ज्या व्यक्ती व संस्थांनी योगदान दिले त्यांच्याबद्दल माहिती ड) प्रचलित असलेली विविध घराणी,

३. अभिनय

अ) व्याख्या

ब) अभिनयाच्या ४ अंगांचे विस्तृत विवेचन - आंगिक, वाचिक, आहार्य , सात्विक

४. नृत्यामधे कामगिरी केलेल्या महत्वपूर्ण व्यक्तींच्या जीवनशैलीचे विवेचन

अ) तजावूर बुधू ब) रूख्मिणीदेवी अरूण्डेल

क) कमला लक्ष्मण ड) बालासरस्वती

मध्यमा पूर्ण - भरतनाट्यम्

एकूण गुध - २००   प्रात्यक्षिक - १००   लेखी - १००

प्रात्यक्षिक

विद्यार्थ्याला शिकवल्या गेलेल्या सर्व रचनांची पूर्ण माहिती असणे आवश्यक आहे. उदाः रचनेचा राग, ताल, रचनाकार इ. शिकविली गेलेली रचना तालामधे म्हणता येणे आवश्यक आहे.

१. तिल्लाना
२. कीर्तनम किंवा स्तुती - शिव, कृष्ण, गणेश, मुरूगन इ. देवतांवर आधारित.

तोंडी

अ) अभिनय दर्पण मधील संयुक्त हस्त विनियोग
ब) सप्ततालाच्या हस्तक्रिया दाखवून ५ जाती त्यामधे म्हणणे.
क) खंड व संकीर्ण जाती तालामधे म्हणणे

लेखी

१. देवदासी पध्दतीबद्दल सविस्तर माहिती
२. भारताच्या विविध प्रांतामधे प्रचलित असलेल्या लोकनृत्यांबद्दल पूर्ण माहिती
३. भरतनाट्यमसाठी उपयुक्त असलेले संगीत, वाद्य, पेहराव, मार्गम याबद्दल पूर्ण माहिती
४. शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य, चित्रपटात वापरले जाणारे नृत्य यामधील फरक स्पष्ट करा.
५. मध्यमा प्रथमला शिकलेल्या जातिस्वरम कोरवई तालामधे लिहिणे.
६. कर्नाटक ताल पध्दतीमधील सप्त तालांची माहिती मात्रा, अंग, जाति इ. च्या सहाय्याने देणे

विशारद प्रथम - भरतनाट्यम्

एकूण गुण - ३५०   प्रात्यक्षिक - २५०   लेखी - १००

प्रात्यक्षिक

१. तोडिया मंगळम / पुष्पांजली
२. वर्णम - आदि ताल
३. पदम् - वात्सल्य

तोंडी

१. अभिनयदर्पण प्रमाणे दशावतार हस्त व देवता हस्त
२. अलरिपूमधील तिरमाणम तालात म्हणून तट्टकळीवर वाजविणे.

लेखी -

१. वय, सामाजिक स्थान, मानसिक अवस्था इ. च्या आधाराने 'नायिका' ही संकल्पना स्पष्ट करणे.
२. नायक भेद - श्रृंगार रसाप्रमाणे ४ भेद, स्वभावानुसार, उदा. धीरललित, धीरोदत्त, इ. प्रमाणे स्पष्ट करणे
३. तालाच्या दशप्राणांबद्दल संपूर्ण माहिती देणे
४. भरताच्या नाट्यशास्त्रामधे उल्लेख केलेल्या नाट्याच्या उत्पत्तीची कथा सांगून त्याचे महत्व स्पष्ट करा.
५. थोडक्यात उत्तरे लिहा
   अ) नाट्यधर्मी, लोकधर्मी
   ब) ४ वृत्ती - भारती, सात्वती, कैशिकी, आरभटी
   क) तांडव - लास्य
६. आदल्या वर्षी शिकलेला तिल्लना कोरवई या तालामधे लिहिणे
७. हिंदुस्तानी आणि कर्नाटकी तालपद्धतीतील भेद स्पष्ट करणे.
८. नंदिकेश्वर लिखित 'अभिनयदर्पण' या ग्रंथाची संपूर्ण माहिती देणे.
९. भारतात प्रचलित असलेल्या ७ शास्त्रीय नृत्यशैलींचा तौलनिक अभ्यास.

विशारद पूर्ण - भरतनाट्यम्

एकूण गुण - ३५० **प्रात्यक्षिक - २५०** **लेखी - १००**

प्रात्यक्षिक

१. जातिस्वरम - रूपक तालाशिवाय इतर कोणत्याही तालशिवाय इतर तालामधे बांधलेल्या जातिस्वरम

२. जावळी / शृंगार पदम्

३. भक्ती पदम्

तोंडी

१. शिर, दृष्टी, ग्रीव यांचे विनियोग

२. तिल्लनामधील कोरवई आणि वर्णममधील तीरमाणम / जातिचे तट्टकळीवर नटुवंगम

३. एका तिरमाणम व एक पल्लवीची ओळ विद्यार्थ्याला परीक्षेच्या आधी दिली जाईल त्याची संरचना करणे.

लेखी

१. भारतामधे प्रचलित असलेल्या नृत्य नाट्य पद्धतीची पूर्ण माहिती
अ) कुडिअट्टम ब) भागवतमेळा क) यक्षगान

२. भारतामधे प्रचलित असलेल्या ७ शास्त्रीय नृत्यशैलींचा सखोल तौलनिक अभ्यास

३. खालील कवींचे योगदान

१) पुरंदरदास
२) पापानासन शिवम
३) ओत्तुकाडु वेकंट सुबियर
४) धर्मपूरी सुब्रमण्यम अय्यम
५) अरूणाचल कविरयार
६) गोपालकृष्ण भारती
७) तंजावर बंधू

८) तंजावर सर्फोजी महाराज
९) स्वाती तिरूणाल
१०) जयदेव
११) मीराबाई
१२) क्षेत्रया

४. नृत्याचा विषय असणाऱ्या पौराणिक कथा व त्यामधील पात्रांचा अभ्यास उदा. राम - रामायण, विष्णु - दशावतार, कृष्णलीला, शिव, नटराज, देवी इ.

५. वर्णम मधील तिरमाणम / जाति तालामधे (अडवू, शोल्लू) लिहिणे.

अलंकार प्रथम - भरतनाट्यम्

एकूण गुण - ५०० **प्रात्यक्षिक - ३५०** **लेखी - १५०**

प्रात्यक्षिक

१. आदि तालाव्यतिरिक्त इतर कोणत्याही तालामधील वर्णम

२. अष्टपदी - साहित्याचा अर्थ समजावून करून दाखवणे.

३. जातिस्वरम किंवा तिल्लनाच्या दोन कोरवईची संरचना करणे. अभिनयपदमच्या पल्लवी व अनुपल्लवीची संरचना करणे (संरचना करणेसाठी दिला गेलेला वेळ - दीड तास)

४. आधी शिकलेल्या पेक्षा वेगळ्या रागातील आणि तालातील तिल्लाना करून दाखवणे.

५. आधी शिकलेल्या कोणत्याही एका रचनेचे पूर्ण नटुअंगम करणे

६. एका विद्यार्थ्याला तुमच्या पसंतीच्या कोणत्याही एका अडवू समूहातील तीन प्रकार शिकवणे. अभिनयाच्या पल्लवीची ओळ शिकवणे (अभिनयाची कोणतीही रचना चालेल) दिला गेलेला वेळ - ८ दिवस

लेखी पेपर - १

१. भारतीय, पाश्चिमात्य व साऊथ एशियन देशांमधील 'कला' या संकल्पनेचा तौलनिक अभ्यास
२. तात्विक व धार्मिक विचारांच्या साहाय्याने हिंदुत्व याचा सखोल अभ्यास
३. भारतीय मंदिरांमधील शिल्पांचा अभ्यास तसेच चोला, मराठा, नायक राजवटीच्या काळातील वास्तुशिल्पांचा अभ्यास व या राजवटीने कलेला दिलेले योगदान
४. शास्त्र व परंपरा यांचा परस्पर संबंध स्पष्ट करा
५. भरतनाट्यमच्या दृष्टीने अभिनयदर्पणचे महत्व
६. शिलापदिकरम, तिरूटवई, शाकुंतल, इ. सारख्या तमिळ व संस्कृत नाटकांवरती थोडक्यात माहिती.

पेपर - २

१. नाट्यशास्त्र, या ग्रंथाची संपूर्ण माहिती (लेखक, अध्याय, इ.)
२. नाट्यशास्त्रातील नृत्य अध्यायांची पूर्ण माहिती (रंगमंच, आंगिक, अभिनय, भरताचा रससिध्दांत)
३. आजच्या युगात नाट्यशास्त्र या ग्रंथाची उचितता (प्रयोजन)
४. भरतनाट्यमच्या अनुषंगांने संगीत रत्नाकर व नृत्यरत्नावली या ग्रंथाचा अभ्यास
५. संरचना ही संकल्पना नाट्यशास्त्राच्या अनुषंगाने समजून घेणे.

अलंकार पूर्ण - भरतनाट्यम्

एकूण - ५०० **प्रात्यक्षिक - ३५०** **लेखी - १५०**

प्रात्यक्षिक -

१. मंगळम
२. सध्याची सामाजिक परिस्थिती हा विषय असणारी एखादी नवीन नृत्यरचना ज्यामधे नृत्य व या दोन्हींचा समावेश असेल (साधारण वेळ २० मिनिटे)
३. श्लोक / विरूत्तम - अभिनयाची रचना जी तालाशिवाय केली जाते.

तोंडी :

१. दिलेल्या पदमची संरचना करणे.
२. तुमच्या आवडीच्या कोणत्याही एका रचनेची समूहनृत्य संरचना करणे
३. दिल्या गेलेल्या एका विद्यार्थ्याला तुमच्या आवडीच्या २ कोरवई व पदमची पल्लवी व अनुपल्लवी शिकवणे.

लेखी - प्रश्न :

१ उदय शंकर, रूख्मिणीदेवी अरूण्डेल आणि रविंद्रनाथ टागोर यांचे नृत्यातील योगदान
२. संरचनेची संकल्पना, त्याची प्रमुख वैशिष्टे, मार्गममधील संरचनेच्या संकल्पनेचे विश्लेषण
३. आधुनिक युगातील संरचनाकारांच्या संरचना
अ) डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम - भरतनृत्यम (ब) डॉ चंद्रशेखर - नवनृत्य
क) डॉ. सुचेता चापेकर - नृत्यगंगा
४. भारतातील निरनिराळ्या प्रांतातील नृत्यरचनांचा इतिहास व विविध पारंपारिकतेचा सखोल अभ्यास.

प्रश्न

१. गुरू या शब्दाची व्याख्या आणि त्यांचे शैक्षणिक क्षेत्रातील महत्व
२. प्राचीन काळातील गुरूशिष्य परंपरा आणि सध्याच्या अध्यापनातील विश्वासार्हता
३. विविध स्तरावरील नृत्यशिक्षण व त्यांचे उद्दिष्ट
अ) शाळा ब) छंदवर्ग क) नृत्य हे व्यवसाय म्हणून घेण्याची इच्छा असणाऱ्यांसाठी वर्ग ड) विद्यापीठात शिकवला जाणारा अभ्यासक्रम
४. सादरीकरणाव्यतिरिक्त नृत्य शिकल्याचे इतर फायदे - व्यक्तिमत्व विकास नृत्य समीक्षक इ.
५. नृत्यशिक्षणाची तत्वे
(1) Whole - part - whole (2) from known to unknown

प्रात्यक्षिक

मंच प्रदर्शन - दीड ते दोन तास अवधीचे संपूर्ण एकल नृत्य सादरीकरण करणे.

Bharatnatyam

Prarambhik

Total marks – 50

Practical

1. Namaskriya ñ Explaining Namaskara with proper meaning
2. Vyayama ñ Basic exercises of different body parts like neck, hands, legs, bends & stretches should also be included.
3. Adavus ñ Basic steps & footwork
   a) Tatta Adavu ñ Tai ya tai
   b) Natta Adavu ñ Tai yum Tat ta Tai yum ta
   c) Metta Adavu ñ Tai Tai Tam
   d) Tatta Kuditta / Kuddichi Metta ñ Tat tai ta Ha

   Demonstrating minimum 5 steps of each adavu set in Vilambit, Madhya & Dhrut Laya.
   Saying all the adavus in Chatushra Jaati.

Oral

1. Asamyukta Hasta ñ Abhinaya Darpan
2. Shiro Bheda - Abhinaya Darpan
   Drishti Bheda- Abhinaya Darpan
   Griva Bheda - Abhinaya Darpan
3. Pada Bheda ñ Natya Shastra
4. Reciting Chatushra Jaati (4 Matras) in 3 speeds
5. Knowing the meaning of terms used in dance :-
   1 Adavu 2 Laya 3 Taal 4 Bharatnatyam etc.
6. Name of the Guru / teacher & gharana (school) the student follows.
7. Basic Information about the 4 main dance styles Bharatnatyam, Kathak, manipuri & Kathakali.
   Sister Styles ñ Odissi, Mohiniattam, Kuchipudi.

Praveshika Pratham - Bharatnatyam

Total marks – 100 **Practical – 75** **Oral – 25**

Practical

Adavus ñ

a) Tirmanam Adavu ñ Gi na Tom
b) Mandi Adavu ñ Tat Tai Ta
c) Sarrika Adavu ñ Tai Kat Tai Hi
d) Vishru Adavu ñ Ta tai tai tat
e) Kuditta Metta Adavu ñ Tai kat Tai hi
f) Peri Adavu ñ Tai Kat Tai hi
g) Shikhar Adavu ñ Tat tai ta ha dhit tai ta

Minimum 4 steps of each adavu set in 3 speeds

Oral

1. Asamyukta Hasta Viniyog ñ Pataka to mayura with proper meanings
2. Samyukta hasta according to Abhinay Darpan
3. Mandala Bheda ñ Abhinay Darpan
4. Sthanaka Bheda ñ Abhinay Darpan
5. Hasta Prachara ñ Natya Shastra
6. Reciting Tishra jati (3 Matras) in all the 3 speeds with proper hastakriya.
7. Explaining following terms
   1. Matra 2. Avartana 3. Jaati 4. Sam
8. Saying all the adavus in Chatushra jati.

Praveshika Purna - Bharatnatyam

Total marks – 150 Practical – 100 Written – 50

Practical

Adavus ñ

1. Jaati Adavu ñ Tai ten dhata
2. Tatti metti adavu ñ All the 5 jatis
3. Tirmanam adavu ñ Tari kit Tom

1. **Alaripu – Tishra or Chatushra jati**

   The student should be able to tell the meaning of the term ëAlaripu ë & should also be able to recite the composition in proper taal.

2. **Pushpanjali – Natai or any other raga**

   The student should explain the term (Pushpanjali) and should be able to identify the raga and taal of the composition.

3. **Presenting a Jaati / Tirmanam in Rupak or Aadi Taal & reciting the Shollu in taal**

Oral 1. Asamyukta Hasta Viniyog ñ Ardhachandra to padmakosh

2. Reciting Khanda & mishra jati in 3 speeds

Theory Written

1. Give Definitions

   a) Adavu b) Korvai c) Jaati d) Tirmanam
   e) Bhramari f) Utplavana g) Chari h) Mandala
   i) Sthanaka j) Laya k) Matra l) Taal
   m) Avartan n) Anga o) Sam p) Ushi / offbeat

2. Basic Information about Bharatnatyam

   a) Place of origin b) Language used
   c) Meaning of the term d) Important features of the technique.

3. Explain in short

   a) Natyakrama b) Paatraprana
   c) Paatralakshan d) Sabha Lakshana

4. Writing notation of Alaripu

Madhyama Pratham - Bharatnatyam

Total marks – 200 Practical – 100 Written – 100

Practical

1. Jatiswaram ñ The student should present the composition and should also be able to say the korvaiís in proper taal .
2. Shabdam ñ Knowing the concept of Sanchari and explaining the meaning of the words in the composition.
3. Alaripu ñ Mishra Jaati

Oral

1. Saying Sankeerna Jati in Taal
2. Asamyukta Hasta ñ from Sarpashirsha till trishula
3. Natuvangam of a teermanam on tattakali

Written

1. Definition
   a) Anga, Pratyanga and Upanga
   b) Tandava and Lasya
   c) Lokadharmi and Natyadharmi
2. Detailed knowledge about Bharatnatyam
   a) History
   b) Development
   c) Prominent individuals and institutions that contribute to the development of the style
   d). Different Gharanas
3. Abhinaya
   a) Definition of the term
   b) Explaining in detail the 4 aspects of abhinaya ñ Angika, Vachika, Satvika, Aharya.
4. Life histories of the following prominent personalities -
   a) Tanjore Quarlet
   b) Rukminidevi Arundale
   c) Kamalaa Laxman
   d) Baalasaraswati

Madhyama Poorna - Bharatnatyam

Total marks – 200 Practical – 100 Written – 100

Practical

The student should be able to present all the compositions in the portion fully along with identifying raga and taal of the composition and saying the song and the Korvais in taal.

1) Tillana
2) Keertanam or stuti based on deities ñ Shiva, Krishna, Devi , Murugan etc.,

Oral

a) Saying samyukta hasta viniyogas from abhinay darpan
b) Showing the hastakriya of saptataals and reciting each jati in it.

Written

1. Detailed information about Devadasi tradition.
2. Knowledge about the folk dances of India.
3. Detailed Knowledge about Bharatnatyam with respect to-
   a) Music b) Musical Instruments
   c) Costume d) Repertoire
4. Difference Between Folk, Classical, Bollywood / Cinema Dance
5. Notation of Jatiswaram (Korvais) Learnt in previous year.
6. Complete knowledge of 7 taalas of Karnatak System with reference on Matra, Anga, Jaati Etc.

Visharad Pratham - Bharatnatyam

Total marks – 350 Practical – 250 Written – 100

Practical :

1. Todiya Mangalam / Pushpanjali
2. Varnam - Aadi taal
3. Padam (Vatsalya)

Oral :

1. Dashavatar Hasta and Devata Hasta from Abhinay Darpan
2. Reciting teermanam of Alaripu and playing it on tattakali

Written :

1. Concept of Nayika with reference to
   a) Age b) Social Status
   c) Character d) Emotional State
2. Nayak Bheda according to
   a) Four Bhedas of Shringar Rasa ñ Anukula, Dakshina, Dhrishta and Shanstha
   b) Character Types
3. Explaining the Dashprana ñ ten prana of taal
4. Story of origin of Natya according to Bharata in Natyashastra and its significance.
5. Explain in short
   a) Natyadharmi - Lokadharmi (Margi ñ Desi)
   b) Four Vrittis - Bharati, Satvati, Arabhati, Kaishiki
   c) Tandav and Lasya
6. Notation of Tillana (Korvais) learnt in previous year
7. Major difference between Taal system ñ Karnatak & Hindustani
8. Complete Knowledge about Abhinay darpan written by Nandikeshwara
9. Comparative study of major 7 dance classical styles practiced in India.

Visharad Poorna - Bharatnatyam

Total marks – 350 Practical – 250 Written – 100

Practical :

1. Jatiswaram - Composed in any taal other than Rupak
2. Javali / Shringar Padam
3. Bhakti Padam

Oral :

1. Viniyogas of Shira, Dristi, Griva
2. Natuvangam of korvais in Tillana and teermanams of Varnam on Tattakali
3. Choreography of a teermanam and a pallavi of a song for abhinaya (Both will be given on the spot and a time of 1 hour will be allotted for the choreography)

Written :

1. **Knowledge of Dance Drama style prevalent in India**
   a) Kudiyattam b) Bhagvatmela c) Yakshagana
2. **Comparative study of 7 major classical dance styles**
3. **Study of works of the following poets.**
   a) Purandaradasa
   b) Papanasan Shivam
   c) Ottukadu Venkata Subbier
   d) Dharmapuri Subramanyam Iyer
   e) Arunachala Kavirayar
   f) Gopal Krishna Bharati
   g) Tanjore Quartet
   h) Tanjavur Sarfoji Maharaj
   i) Swati Tirunal
   j) Jayadeva, k) Meerabai , l) Kshetraya
4. **Study of mythological Characters**
   Shiva, Nataraja, Krishna, Rama, Vishnu, Devi, Etc., in Various forms and stories related to them portrayed in Classical dance such as, Dashavatara, Draupadi Vastraharan, Leelas of Krishna, Sapta Tandav Etc.
5. **Notation of teermanams of Varnam with shollu and adavus**

Alankar Pratham - Bharatnatyam

Total marks – 500 Practical – 350 Written – 150

Practical :

1. Varnam in any other taal except Aadi .
2. Ashtapadi ñ Explaining the meaning and performing
3. Tillana in different raga and taal that learnt earlier
4. Choreography of 2 korvaiís of Jatiswaram or Tillana and a Pallavi and anupallavi of a given abhinay padam (Time allotted $1^{1/2}$ hour)
5. Natuvangam of any one item learnt earlier.
6. Teaching a student 3 steps of adavu set of your choice and a line of abhinay (Pallavi) (Time allotted 8 days)

Written : Paper I

1. Comparative study of concept of Art in Indian , Western and South Asian Countries.
2. Detailed study of ë Hinduismí related to its philosophy and spirituality.
3. A brief study of the sculptures in Indian temples and the form of architecture of Chola, Nayaka, Maratha Dynasties and their contribution towards Art .
4. Relation of shastra and Parampara.
5. Abhinay Darpan and its importance in context of Bharatnatyam.
6. A brief note on ancient Tamil and Sanskrit plays like Shilapudikaram, Tirutavai, Shakuntal, etc.,

Paper II

1. Detailed study of the author of N.S and its period , its content (chapters) etc.
2. Detailed study of chapters related to dance in N.S
3. Rangmanch / Playhouse, 4. Angika Abhinay
4. Bharatas Rasa Theory, 6.Natyashastra and its relevance in present day, 7.Study of other texts with relevance to Bharatnatyam ñ Sangeetratnakar & Nrittaratravali.
5. Choreography ñ understanding the concept with the help of N.S. i.e. the concept of Bandha.

Alankar Poorna - Bharatnatyam

Total marks – 500 **Practical – 350** **Written – 150**

Practical : 1) Mangalam (ending of a programme)
2) A new nritta composition related to the present day social life consisting of nritta and nritya. *(20 min)*
3) Shloka / Viruttam ñ A composition of abhinay without taal.
Oral : 1) Choreography of a given padam
2) Choreography on a group of a dances any one item of choice.
3) Teaching a given student 2 Korvaiís of your choice and teaching a anupallavi and pallavi of a padam .

Written : Paper 1

1) Contribution of Uday Shankar, Rukhmini Devi and Rabindranath Tagore.
2) Concept of choreography ñ its special features. Explaining the choreographic concept in a Margam
3) Modern day choreographers with their choreographies.
   a) Dr. Padma Subramanyam. (Bharatnrityam)
   b) Prof. Chandrashekhar. (Navanritya)
   c) Dr. Sucheta Chaphekar (Nrityaganga)
4) Detailed study of a dance drama (Uprupaka) with their history and various traditions followed in different parts of India.

Paper II

1) Explaining the terms Guru and his importance in the learn ing process.
2) Guru Shishya Parampara in ancient times and its relevance in present day educational systems.
3) Dance training for different levels and their aim.
   a) In the schools b) Hobby class c) Training for potential performers.
   d) University courses
4) Advantage of Dance training other than performing e.g. personality development, acting as a critic etc.
5) Principles of Dance training ñ whole ñ part - whole, from known to unknown

Practical : Mancha pradarshan ñ Giving a full fledge performance of 1 hour 30 mins to 2 hours.

अनुक्रमाणिका

	पान क्र.
१. परीक्षा नियमावलि	१
२. गायन - वादन पाठ्यक्रम	३
३. तबला पाठ्यक्रम	१७
४. कथ्थक पाठ्यक्रम	२६
५. भरतनाट्यम् पाठ्यक्रम	४३
६. भरतनाट्यम् पाठ्यक्रम (इंग्रजी)	५४

■ **प्रकाशक :**

भारतीय संगीत प्रसारक मंडळ, पुणे

४९५, शनिवार पेठ, पुणे - ४११ ०३०

■ **प्रकाशन :** जून २००८

■ **मुख्य कार्यालय :**

४९५ शनिवार पेठ, मेहुणपुरा, पुणे ४११०३० फोन : ०२०-२४४५०७९५

email - gandharvapune@ gmail.com

Website - www. gandharvapune.com

■ **मुद्रक :**

रोहिणी ग्राफिक्स

१०२५/बी, सदाशिव पेठ, पुणे-३०.

फोन : ०२०-२४४७ १४३९

■ **मूल्य : ६० रूपये**

अनुक्रमाणिका

	पान क्र.
१. परीक्षा नियमावलि	१
२. गायन - वादन पाठ्यक्रम	३
३. तबला पाठ्यक्रम	१७
४. कथ्थक पाठ्यक्रम	२६
५. भरतनाट्यम् पाठ्यक्रम	४३
६. भरतनाट्यम् पाठ्यक्रम (इंग्रजी)	५४